VIDYA
UNIVERSITY PRESS

समाज एवं संस्कृति

BASED ON NEP GUIDELINES

7

1. मध्यकालीन विश्व

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) सप्त सैन्धव 2. (d) राजतरंगिनी 3. (d) आत्मकथा

(ख) 1. इण्डिया 2. भरत 3. सप्त सैन्धव 4. चन्दबरदाई 5. हिन्दुस्तान

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. भारतीय उपमहाद्वीप में सम्मिलित देशों के नाम निम्नलिखित हैं—
भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान तथा श्रीलंका।

2. प्राचीनकाल में भारतीय उपमहाद्वीप के लिए सप्त-सैन्धव, ब्रह्मर्षि देश, आर्यावर्त, दक्षिण पथ और भारत आदि शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता था।

3. मध्यकाल में निम्नलिखित मुख्य ऐतिहासिक घटनाएँ हुईं—
   (i) भारत की अधिकांश प्रादेशिक भाषाएँ इसी काल में विकसित हुई।
   (ii) इस युग में हमारे भोजन तथा वेशभूषा में भी अनेक परिवर्तन हुए।
   (iii) नवीन धर्मों दीन-ए-इलाही तथा सिक्ख धर्म के अतिरिक्त हमारे अनेक धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक रीति-रिवाज, परम्पराएँ आदि इसी काल में विकसित हुए।
   (iv) इस अवधि में हिन्दू तथा मुस्लिम संस्कृतियों के विशिष्ट तत्त्वों के सम्मिश्रण से भारतीय संस्कृति विकसित हुई। यह सांस्कृतिक समेकन कला, स्थापत्य, साहित्य, संगीत, चित्रकला आदि में परिलक्षित होता है।
   (v) भक्ति एवं सूफी सन्तों ने हिन्दू तथा मुस्लिम धर्मों के मूलभूत सिद्धान्तों की अच्छी समझ प्रस्तुत की। इससे आपसी तालमेल तथा सहिष्णुता की भावना उत्पन्न हुई।
   (vi) धातु मुद्रा के प्रचलन से देश का आर्थिक विकास हुआ। कृषि तथा व्यापार-वाणिज्य में भी विस्तार हुआ।
   (vii) अनेक यूरोपीय देशों ने भारत की आर्थिक सम्पन्नता से आकर्षित होकर उसके साथ प्रत्यक्ष व्यापार सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की।
   (viii) समाज में स्त्रियों के स्थान तथा स्तर में गिरावट दर्ज हुई।

4. यूनानियों ने सिन्धु नदी को इण्डस कहा तथा देश को उन्होंने इण्डिया कहा जो संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 'भारत' का अंग्रेजी रूपान्तर है।

(ङ) 1. भारत में मध्य युग का प्रारम्भ आठवीं शताब्दी में हुआ और अठारहवीं शताब्दी तक जारी रहा। इस अवधि के दौरान राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक परिवर्तन हुए। मध्य युग का अंत मुगलों के पतन के साथ हुआ। इस काल में भारत की अधिकांश क्षेत्रीय भाषाओं का विकास हुआ और दीन-ए-इलाही और सिख धर्म जैसे नए धर्म विकसित हुए इसके अतिरिक्त हमारे अनेक धार्मिक विश्वास तथा सामाजिक रीति-रिवाज, परम्पराएँ आदि इसी काल में

विकसित हुए। इस अवधि के दौरान भारतीय संस्कृति हिंदू और मुस्लिम संस्कृतियों के सम्मिश्रण के साथ विकसित हुई। यह सांस्कृतिक एकीकरण कला, वास्तुकला, साहित्य, संगीत, चित्रकला आदि में परिलक्षित होता है। कई यूरोपिय देश भारत की आर्थिक समृद्धि से आकर्षित हुए और भारत के साथ सीधे व्यापारिक संबंध स्थापित करने की कोशिश की और अपने आर्थिक लाभ के लिए इसे उपनिवेश बनाने के लिए उत्सुक हो गए।

2. मध्यकालीन भारत के इतिहास की जानकारी के विविध स्रोत निम्नलिखित हैं—
   (i) पुरातात्विक स्रोत—इनमें शिलालेख, सिक्के, स्मारक, मन्दिर, किले एवं महल आदि शामिल हैं। ये हमें इस काल में विकसित कला और वास्तुकला के बारे में बताते हैं। इन स्रोतों से इतिहासकारों ने इस काल की बहुत-सी ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित की है।
   (ii) साहित्यिक स्रोत—इनमें विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा दी गई आत्मकथाएँ, कालक्रम और अन्य महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य शामिल हैं। ये साहित्यिक रचनाएँ हमें इस काल के विभिन्न प्रसिद्ध शासकों के बारे में बहुत सारी ऐतिहासिक जानकारी देती हैं।
   (iii) विदेशी यात्रियों और इतिहासकारों के वृत्तांत—अनेक विदेशी यात्रियों ने इस अवधि के दौरान भारत का दौरा किया और उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के आधार पर अपने विवरण लिखे। इन वृत्तांतों से हमें इस काल की बहुत-सी ऐतिहासिक सामग्री मिलती है।
3. शिलालेख हमें महत्त्वपूर्ण घटनाओं और उनकी तिथियों, शासकों के गुणों और उपलब्धियों, उनकी कला और प्रशासन आदि के बारे में प्रामाणिक जानकारी प्रदान करते हैं जबकि सिक्के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्तित्वों, घटनाओं और किसी काल की आर्थिक स्थितियों पर पर्याप्त प्रकाश डालते हैं। अत: ये दोनों मध्यकाल के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
4. मध्यकाल की जानकारी पुरातात्विक और साहित्यिक दो मुख्य स्रोतों से प्राप्त होती है। इस अवधि के लिए स्रोतों को बहुतायत है। इस अवधि के दौरान लिखी गई पुस्तकें हमारे पास उपलब्ध हैं और जिन स्मारकों का निर्माण मध्यकाल में किया गया था वे आज भी खड़े हैं। इसलिए मध्ययुगीन काल के बारे में हमारी जानकारी प्राचीनकाल से बहुत अधिक है।

कीजिए और सीखिए

(च) 1. (v) 2. (iv) 3. (vi) 4. (ii) 5. (i) 6. (iii)
(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें। **(झ)** स्वयं करें।

❑

2. भारत के राजा तथा राज्य : 700-1200 ई०

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) कन्नौज 2. (c) मिहिर भोज 3. (a) पल्लव 4. (b) दन्ति दुर्ग

(ख) 1. पल्लव 2. विजयालय 3. सत्रह बार 4. द्वितीय, 1192
5. मदुरै

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (vi) 4. (ii) 5. (i) 6. (v)

(ङ) 1. आठवीं शताब्दी में उत्तरी भारत एवं दक्कन में तीन सबसे शक्तिशाली राज्यों के नाम निम्नलिखित हैं—(i) गुर्जर-प्रतिहार, (ii) पाल तथा (iii) राष्ट्रकूट।

2. दसवीं शताब्दी के अन्त में प्रतिहार, पाल तथा राष्ट्रकूट राज्यों का लगभग एक साथ ही पतन हो गया। इन क्षेत्रों में नए वंश उदित हुए, जिनमें अधिकांश राजपूत थे जो अपनी वीरता, साहस, आत्मसम्मान और शान के लिए भारतीय इतिहास में आज भी प्रसिद्ध हैं।

3. गुर्जर-प्रतिहार, पाल तथा राष्ट्रकूट समकालीन थे। वे कन्नौज पर अपना नियन्त्रण करने के लिए सदैव संघर्षरत रहते थे। उस समय कन्नौज प्रभुसत्ता का प्रतीक था। इस सतत् संघर्ष को ही त्रिदलीय संघर्ष कहा जाता है। इस त्रिदलीय संघर्ष ने तीनों राज्यों को कमजोर कर दिया तथा यही उनके पतन का कारण भी बना।

4. राजराजा प्रथम और राजेन्द्र प्रथम ये दो सबसे प्रतिष्ठित चोल राजा थे। राजराजा प्रथम को अपने कुशल संगठन तथा व्यापार के साथ चोल साम्राज्य के पुनर्निमाण के लिए जाना जाता है। उसने केरल के चेरों और मदुरै के पाण्ड्यों को हराया। उसने श्रीलंका के उत्तरी भागों को जीतकर उन्हें मुम्मादी चोलमण्डलम नाम से एक चोल प्रान्त बना दिया। उसने कलिंग, मालदीव और लक्षद्वीपों को भी जीत लिया। उसने पश्चिमी चालुक्यों को पराजित किया। राजेन्द्र प्रथम ने पूरे श्रीलंका पर कब्जा कर लिया। उसकी सेनाएँ पाल राज्य में गंगा नदी के तट तक पहुँच गई। उसने गंगईकोण्ड की उपाधि धारण की तथा कावेरी नदी के मुहाने पर एक नई राजधानी गंगईकोण्ड चोलपुरम नाम से स्थापित की।

(च) 1. राष्ट्रकूट दक्कन के शासक थे। वे बादामी के चालुक्यों के अधीन सामन्त थे। वे दन्तिवर्मन के नेतृत्व में सत्ता में आए जिसे दन्तिदुर्ग के नाम से भी जाना जाता है। राष्ट्रकूटों ने एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की तथा शोलापुर (महाराष्ट्र) के निकट मालखेद को अपनी राजधानी बनाया। वह एक महान विजेता था। उसने कांची, कलिंग, कोशल, मालवा आदि के शासकों और चालुक्य शासक कीर्तिवर्मन द्वितीय को भी परास्त कर दिया। उसने महाराजाधिराज परमेश्वर तथा परम भट्टारक की उपाधियाँ धारण कीं। उसके उत्तराधिकारी कृष्ण प्रथम ने अपने राज्य का विस्तार कर्नाटक तक किया। कृष्ण के उत्तराधिकारी ध्रुव ने अपने राज्य की

सीमाओं को दक्षिण में कावेरी नदी तक विस्तृत कर लिया। ध्रुव के पुत्र गोविन्द तृतीय के शासनकाल के दौरान राष्ट्रकूट साम्राज्य कन्नौज से कन्याकुमारी तक और भड़ूच से वाराणसी तक फैला हुआ था। अमोघवर्ष प्रथम ने 62 वर्षों तक शासन किया। कृष्ण तृतीय अन्तिम यशस्वी राष्ट्रकूट शासक था। उसने चोलों को हराकर काँची और तंजौर तथा उज्जैन के परगमारों को हराकर विजय प्राप्त की। लगभग दो सौ वर्षों के अपने शासन के दौरान राष्ट्रकूटों ने दक्कन को राजनीतिक एकता और स्थिरता प्रदान की। उन्होंने दक्कन में चट्टानों को काटकर गुफाएँ बनाईं।

2. सबसे अधिक महान चोल शासक राजेन्द्र प्रथम और राजराजा प्रथम थे। राजराजा प्रथम अपने कुशल प्रशासन के लिए जाने जाते हैं। उसने चोल साम्राज्य का पुनर्निर्माण किया। उसने श्रीलंका के उत्तरी भाग पर विजय प्राप्त की और इसे मुम्मादी चोलमण्डलम के नाम से चोल प्रान्त बनाया। उसने कलिंग, मालदीव तथा लक्षद्वीपों पर भी विजय प्राप्त की। उसने पश्चिमी चालुक्यों को भी पराजित किया। राजेन्द्र प्रथम ने पूरे श्रीलंका पर कब्जा कर लिया। उसकी सेनाएँ पाल राज्य में गंगा नदी के तट तक पहुँच गईं। उसने गंगईकोण्ड की उपाधि धारण की और कावेरी नदी के मुहाने पर एक नई राजधानी गंगईकोण्ड चोलपुरम नाम से स्थापित की। राजेन्द्र प्रथम के पास एक शक्तिशाली जहाजी बेड़ा था। उसने मलाया, जावा तथा सुमात्रा में श्रीविजय साम्राज्य को जीतने के लिए एक नौसैनिक अभियान भेजा।
3. महमूद गजनी पहला तुर्की आक्रमणकारी था। वह अफगानिस्तान के एक छोटे से राज्य गजनी का शासक था। उसने मध्य एशिया में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने का सपना देखा था जिसके लिए उसे एक विशाल सेना के लिए बड़ी मात्रा में धन चाहिए था। उसने भारत के मन्दिरों तथा महलों की अपार सम्पदा के बारे में सुन रखा था। इसलिए उसने 1000 से 1026 ई० के बीच सत्रह बार भारत पर आक्रमण किए और अनेक नगरों तथा मन्दिरों को लूटा।
4. चोल प्रशासन अत्यन्त संगठित तथा कुशल था। राजा सरकार का मुखिया होता था। प्रशासन कार्य अधिकारियों द्वारा किया जाता था, जिन्हें वेतन के तौर पर भूमि दी जाती थी। साम्राज्य छ: मण्डलों (प्रान्तों) में बँटा था, जिनका प्रशासन गवर्नरों द्वारा होता था। ये गवर्नर प्राय: शाही परिवार के राजकुमार होते थे। प्रत्येक मण्डल अनेक वलनाडु (जिला) में तथा प्रत्येक वलनाडु अनेक 'नाडु' (गाँव) में बँटा होता था। बड़े नगरों को 'तानियुर' कहा जाता था। गाँवों का प्रशासन स्थानीय स्वशासन प्रणाली द्वारा होता था। 'उर', 'सभा' तथा 'नगरम' गाँव की तीन सभाएँ थीं जो गाँव के निवासियों को एकता के सूत्र में बाँधती थीं। लोग अपनी सभाएँ स्वयं चुनते थे। काउन्सिल (सभा) अनेक समितियों को नियुक्त करती थीं, जो राजस्व एकत्र करने, कानून तथा व्यवस्था कायम करने तथा न्याय दिलाने का काम करती थी। 'महासभा' ब्राह्मणों को दान में दिए गाँवों की सभा होती थी। 'नगरम' में व्यापारियों का वर्चस्व होता था। चोलों के पास शक्तिशाली सेना थी, जिसमें पैदल सेना, धनुर्धारी, घुड़सवार, हाथी दल और नौसैनिक बेड़े शामिल थे। नौसेना उसका प्रमुख

अंग थी। संगठित नौसेना के बल पर चोल शासक दूरस्थ देशों से व्यापारिक संबंध स्थापित करने में सफल हुए।

5. मुहम्मद गोरी अफगानिस्तान के एक छोटे-से राज्य 'गोर' का शासक था। वह एक महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति था। उसका उद्देश्य भारत की धन-सम्पदा को लूटना मात्र नहीं, बल्कि उस पर शासन करना भी था। सन् 1190 ई० तक उसने पेशावर, लाहौर तथा सियालकोट पर कब्जा कर लिया। उसने पृथ्वीराज और जयचन्द को हराकर उनके राज्यों पर भी कब्जा कर लिया। वह कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में अपने विजित क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त करके स्वदेश लौट गया। उसके आक्रमण ने भारतीय इतिहास के पाठ्यक्रम को बदल दिया क्योंकि इसने भारत में इस्लामी शासन स्थापित किया।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें। **(झ)** स्वयं करें। **(ञ)** स्वयं करें।

❑

3. सल्तनतकाल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) मुसलमानों पर 2. (a) अलाउद्दीन खिलजी 3. (b) मलिक काफूर 4. (b) इल्तुतमिश ने

(ख) 1. इल्तुतमिश 2. इब्राहिम, बाबर 3. मामलुक 4. इल्तुतमिश 5. दिल्ली, देवगिरि 6. कुतुबुद्दीन ऐबक

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (v) 3. (i) 4. (iii) 5. (iv)

(ङ) 1. सन् 1206 से 1526 ई० के काल को भारत के इतिहास में सल्तनत काल के रूप में जाना जाता है। इस अवधि के दौरान तुर्की मूल के पाँच वंशों ने उत्तरी भारत में शासन किया—गुलाम (दास), खिलजी, तुगलक, सैय्यद तथा लोदी।

2. ग्यासुद्दीन बलबन अपनी 'रक्त एवं लौह' की नीति के लिए जाना जाता है।

3. इल्तुतमिश की पुत्री रजिया उसकी उत्तराधिकारी थी। वह मध्यकालीन विश्व की प्रथम व अंतिम मुस्लिम महिला शासक थी। उसने केवल चार वर्ष की अल्प अवधि तक (1236-1240 ई०) कुशलतापूर्वक शासन किया। अपनी बेटी को सुल्तान बनाना और बेटों को नजरअंदाज करना रईसों को खुश नहीं करता था इसके अलावा वे एक महिला के अधीन काम करने को तैयार नहीं थे इसलिए उन्होंने इसका विरोध किया।

4. इल्तुतमिश के समय मंगोलों ने भारत पर आक्रमण किया।

5. सन् 1327 ई० में मुहम्मद बिन तुगलक ने अपनी राजधानी दिल्ली से देवगिरि में स्थानान्तरित कर दी, जिसका नया नाम दौलताबाद रखा गया। उसका यह विचार था कि दक्कन पर नियन्त्रण करने के लिए दौलताबाद उपयुक्त रहेगा।

(च) 1. कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्तराधिकारी इल्तुतमिश था। उसने कई समस्याओं का सामना किया और डटकर उनका मुकाबला किया। उसने कई विद्रोह दबाए तथा अपने राज्य को सुदृढ़ किया। उसने अपनी नीति-कुशलता से अपने साम्राज्य को मंगोल आक्रमणकारी चंगेज खाँ के क्रोध से बचाया। इसलिए उसे दिल्ली सल्तनत का वास्तविक उत्तराधिकारी कहते हैं।

2. एक सक्षम और कुशल प्रशासक के रूप में अलाउद्दीन खिलजी ने अपने साम्राज्य के लिए उचित उपाय किए। उसने अपने रईसों और अधिकारियों के बीच विद्रोह को रोकने के लिए भी कड़े कदम उठाए। राजस्व के क्षेत्र में उसने अनेक सुधार किए और जजिया तथा जकात आदि विभिन्न कर लगाए। अलाउद्दीन ने बाजार-नियन्त्रण प्रणाली लागू की। उसने कुशल डाक-प्रणाली भी लागू की, जिससे साम्राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों से सम्पर्क तथा संचार में आसानी रहे।

3. दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों ने दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय को चलाने और आगंतुकों के लिए एक शानदार दरबार बनाया। अधिकारियों को उनकी वरिष्ठता के अनुसार सीटें दी गईं। शाही दरबार प्राय: शाही महल का एक भाग होता था। इब्नबतूता के अनुसार, एक आगंतुक को तीन भारी सुरक्षा वाले द्वारों से गुजरना पड़ता था। यह एक बड़ा तथा सुसज्जित हॉल होता था। सुल्तान बलबन ने सिजदा तथा पाबोस की प्रथाएँ प्रारम्भ की थीं।

   सुल्तान कुलीनों (सरदारों) की सहायता से शासन चलाता था। इल्तुतमिश ने चालीसा की स्थापना की थी, जो चालीस तुर्की सरदारों का एक समूह था। अधिकांश कुलीन भारत में बसने वाले तुर्की या अफगान परिवारों से संबंध रखते थे। भारतीय मुसलमानों और हिन्दुओं को भी अधिकारियों के रूप में नियुक्त किया गया था। केन्द्रीय मन्त्री, प्रान्तीय सरकार तथा सेनानी कुलीन वर्ग के होते थे। सुल्तान उन्हें वेतन के स्थान पर जागीर देता था। कुछ सुल्तानों को ऐसी भूमि से एकत्रित राजस्व की एक निश्चित राशि प्राप्त होती थी फिर भी रईसों के पास अपने लिए पर्याप्त धन था और वे बड़े ऐशो-आराम से रहते थे।

4. मुहम्मद-बिन-तुगलक की प्रसिद्ध योजनाएँ एवं योजनाओं के असफल होने के कारण निम्नलिखित हैं—

   (i) करों में वृद्धि—उसने सेना के खर्चों को पूरा करने के लिए दोआब क्षेत्र के किसानों पर कर बढ़ा दिया। यह योजना विफल हो गई, क्योंकि अकाल के कारण किसानों ने सुल्तान के खिलाफ विद्रोह कर दिया और उसे अपना आदेश वापस लेना पड़ा।

   (ii) सांकेतिक मुद्रा की शुरुआत—सुल्तान ने प्रतीक मुद्रा यानि चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्कों का चलन किया, परन्तु बड़े पैमाने पर नकली सिक्कों ने प्रचलन के कारण यह परियोजना भी विफल रही। अंत में उसे चाँदी के सिक्कों के बदले ताँबे के सिक्के वापस लेने पड़े। इससे राजकोष को भारी नुकसान हुआ।

(iii) इराक और खुरासान को जीतने का निश्चय करना—यह योजना सुल्तान के लिए एक आपदा साबित हुई, क्योंकि उसने एक विशाल सेना जुटाने के लिए बहुत पैसा खर्च कर दिया लेकिन उसने परिवहन की समस्या और भूगोल की कठिनाइयों पर विचार नहीं किया। मुहम्मद तुगलक की दूरदर्शी योजनाएँ उसके और राज्य के लिए विनाशकारी साबित हुईं, क्योंकि वे बिना किसी योजना और निर्णय के लागू की गई थी। भूमि बंजर हो गई और शाही खजाने में भारी कमी आई।

कीजिए और सीखिए

(छ) 1. कुतुबुद्दीन ऐबक 2. स्वयं करें।
3. रजिया सुल्तान 4. अलाउद्दीन खिलजी
5. जलालुद्दीन 6. अलाउद्दीन खिलजी
7. ग्यासुद्दीन

(ज) स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

4. मुगल साम्राज्य

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) मेवाड़ के 2. (c) सूर 3. (d) अकबर
4. (a) हेमू और बैरम खान

(ख) 1. जहाँगीर 2. हेमू 3. औरंगजेब 4. शाहजहाँ
5. फरगाना

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. मुगल साम्राज्य का संस्थापक बाबर था।
2. बैरम खान अकबर का संरक्षक था। वह चार वर्षों (1556 ई० 1560 ई०) तक मुगल साम्राज्य का प्रधानमन्त्री एवं वास्तविक शासक बना रहा।
3. दीन-ए-इलाही अकबर द्वारा चलाया गया एक नया धर्म था। उसने नए धर्म में सभी धर्मों के सिद्धान्तों को शामिल किया। यह धर्म से अधिक नैतिक आचार संहिता थी।
4. मुगल सम्राटों की दो आत्मकथाओं के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) तुजुक-ए-बाबरी (ii) तुजुक-ए-जहाँगीरी

(च) 1. बाबर ने भारत की प्रसिद्ध अपार धन-दौलत के बारे में बहुत सुन रखा था। स्थानीय शासकों ने उसे भारत आने तथा लोदियों को हराने के लिए आमंत्रित किया तो बाबर ने सोचा कि यह अपने राज्य का विस्तार करने का एक अच्छा अवसर है। उसने 1526 ई० में पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित किया। इसके बाद

उसने खानवा के युद्ध में 1527 ई० में मेवाड़ के राणा साँगा को हराया। सन् 1528 ई० में मालवा के शासक मेदिनीराय को तथा अन्त में 1529 ई० में महमूद लोदी को हराया। बाबर का नियन्त्रण अब उत्तरी भारत पर हो गया।

2. शेरशाह का वास्तविक नाम फरीद था। वह जौनपुर के एक छोटे जागीरदार का पुत्र था। वह बिहार के शासक की सेना में था और बाद में बाबर की सेना में भर्ती हो गया। वह धीरे-धीरे शक्तिशाली होता गया तथा उसने दक्षिणी बिहार पर पूर्ण नियन्त्रण स्थापित कर लिया। उसने हुमायूँ को चौसा और कन्नौज के युद्ध में हराया और भारत का सम्राट बन गया। उसने पाँच वर्ष की छोटी अवधि (1540-1545 ई०) तक शासन किया।

   शेरशाह अपनी प्रशासन व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है। उसने अपने साम्राज्य को सरकारों (प्रान्तों) में बाँटा तथा सरकारों को पुन: परगनों (जिलों) में बाँटा। उसने न्याय के लिए समान कानून लागू किए तथा मुद्रा की सुधरी प्रणाली लागू की जिसमें चाँदी के सिक्के (जिसे रुपया कहा जाता था) का चलन किया, जो पूरे मुगल काल में चला। शेरशाह के पास एक विशाल सेना थी, जिसमें पैदल, घुड़सवार तथा हाथी सम्मिलित थे। वह अपने अधिकारियों तथा सैनिकों को नकद वेतन देता था। उसने वास्तविक खेती की भूमि और उपज की मात्रा के अनुसार भू-राजस्व तय किया। आमतौर पर उपज का एक चौथाई भाग भू-राजस्व के रूप में लिया जाता था।

3. अकबर का दरबार शिक्षा एवं कला का केन्द्र था। शिक्षा तथा संस्कृति के प्रचार में दरबार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने विद्वानों तथा कलाकारों को धर्म, दर्शन, साहित्य, जीवन-कथा, इतिहास, गणित, खगोल, चिकित्सा आदि विषयों पर वैज्ञानिक तथा साहित्यिक रचनाएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। स्थापत्य, संगीत, चित्रकला आदि को भी प्रोत्साहित किया गया।

   अकबर के दरबार में 'नवरत्न'—राजा टोडरमल, राजा बीरबल, अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना, तानसेन, अबुल फजल, फैजी, मुल्ला दो-प्याजा, मानसिंह तथा भगवान दास थे।

4. अबुल फजल द्वारा लिखित 'अकबरनामा' तथा 'आइन-ए-अकबरी' उच्च स्तरीय तथा महान शैली की साहित्यिक रचनाएँ हैं। अकबरनामा तीन खण्डों में है। पहला खण्ड तैमूर से लेकर हुमायूँ तक मुगल राजवंश के इतिहास पर प्रकाश डालता है। खण्ड दो और तीन अकबर के शासन को समर्पित हैं तथा उस समय की परिस्थितियों का वर्णन करती हैं। आइन-ए-अकबरी भी तीन खण्डों में है तथा अकबर के संस्थानों पर सबसे विश्वसनीय आलेख हैं। यह सभी विभागों और प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजस्व सुधारों सहित सभी विषयों पर अकबर के नियमों से संबंधित है।

5. सन् 1581 में अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक एक नया धर्म चलाया, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए था। उसने नए धर्म में सभी धर्मों के सिद्धान्तों को शामिल किया। यह धर्म से अधिक नैतिक आचार संहिता थी। इसके प्रदर्शन के लिए कोई पुजारी या अनुष्ठान नहीं होता था। उसने नए धर्म के प्रति किसी को मजबूर

नहीं किया। अकबर अपने लोगों का आध्यात्मिक मार्गदर्शक था। उसने भोजन के लिए जानवरों की हत्या को हतोत्साहित किया। उसने अंगों के उत्परिवर्तन जैसे कठोर दण्ड को बन्द कर दिया। उसने सती को भी अस्वीकार कर दिया। हालांकि दीन-ए-इलाही' कई अनुयायियों को आकर्षित करने में विफल रहा फिर भी इसने विविध धर्मों के लोगों को एक साथ लाने और उनमें सहिष्णुता पैदा करने के लिए एक बहुत ही उपयोगी उद्देश्य पूरा किया। यह धर्म अकबर की मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।

6. आज भारत में अनेकता में एकता की संस्कृति या परम्परा है। यहाँ रहने वाले लोग अपने देश के प्यार और विविधता से जुड़े हुए हैं। वे इसे अपनी मातृभूमि मानते हैं। इसके अतिरिक्त वे अपनी खुद की सरकार चुनते हैं और किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए बिना कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं, जो मुगल साम्राज्य के दौरान नहीं था। इसलिए भारत अब एक एकीकृत देश है जिसकी विशेषता विविधता है और यह राष्ट्रीय एकीकरण में कभी भी चुनौति पेश नहीं करता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

(झ) 1. सिख।
2. खुर्रम
3. हुमायूँ
4. जजिया
5. पानीपत
6. रुपया
7. जात
8. हल्दीघाटी

❑

5. सामाजिक परिवर्तन : गतिशील एवं स्थायी समुदाय

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) चीन के 2. (c) कृषक 3. (d) हिन्दू निम्न जातियाँ

(ख) 1. कायस्थ 2. निम्न (अछूत) 3. अहोम 4. शिया, सुन्नी

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (v) 3. (ii) 4. (i) 5. (iv)

(ङ) 1. धोबी, चर्मकार (चमार), नट, केवट आदि अछूत जातियाँ कहलाती थीं।

2. कुछ जनजातियों, उनके क्षेत्रों तथा व्यवसायों का उल्लेख निम्नलिखित हैं— गोंड, भील, संथाल आदि प्रमुख जनजातियाँ थीं। वे विन्ध्य, बिहार, बंगाल, मध्य प्रदेश तथा दक्कन की वनाच्छादित पहाड़ियों में निवास करती थीं। वे खेती, आखेट, मछली पकड़ने आदि के द्वारा जीवनयापन करती थीं।

3. अहोम एक जनजाति थी, जिसने तेरहवीं शताब्दी से 1838 ई० में ब्रिटिश शासन की स्थापना होने तक अधिकांश असम प्रदेश पर शासन किया।
4. गोंड मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में संकेन्द्रित थे।

(च) 1. पूर्व मध्यकाल (800-1200 ई०) में भारतीय समाज चार पारम्परिक जातियों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में विभाजित था। ब्राह्मणों को समाज में विशेष सम्मान तथा अधिकार प्राप्त थे जबकि शूद्रों का समाज में बहुत निम्न स्थान प्राप्त था, उन्हें अछूत माना जाता था। राजपूत समाज में स्त्रियों का बहुत सम्माननीय स्थान था। वे स्वयंवर में अपने पति का चुनाव कर सकती थीं। उनमें पर्दा-प्रथा नहीं थी, उन्हें उच्च शिक्षा भी दी जाती थी। पूर्व मध्यकाल में दक्षिण भारत में शासकों द्वारा ब्राह्मणों को बहुत सम्मान दिया जाता था। व्यापारी वर्ग भी अपनी सम्पत्ति के कारण समाज में सम्मानित था। अधिकांश लोग सामान्य प्रजा थे। ऊँची जातियाँ निम्न जातियों पर अनेक प्रकार के प्रतिरोध लगाती थीं। निम्न जातियों को गाँव के तालाब या कुएँ से जल लेने या मन्दिर में प्रवेश करने का अधिकार नहीं था।
2. मध्यकाल के दौरान हिन्दू समाज पहले की भाँति चार प्रमुख जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व, शूद्र) में विभाजित था। अनेक मिश्रित जातियाँ भी विकसित हो गई थीं। समाज में ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों का स्थान गिर गया था। ब्राह्मणों को राजसी संरक्षण मिलना बन्द हो गया था। राजनीतिक शक्ति क्षीण होने से क्षत्रियों का मनोबल गिर गया था। समय के साथ-साथ जाति व्यवस्था और अधिक कठोर और जटिल हो गई। ब्राह्मण अभी भी विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के थे जबकि शूद्रों को अछूत माना जाता था। अन्तर्जातीय विवाह की आमतौर पर अनुमति नहीं थी।
3. गोंडवाना, जिसे कभी-कभी गोंडारण्य भी कहा जाता है। मध्य भारत में एक ऐतिहासिक प्रदेश है जिसका विस्तार मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों तक है। यहाँ द्रविड़ वर्ग की गोंड जनजाति निवास करती है, जिसकी जनसंख्या 75 लाख से अधिक है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख चौदहवीं शताब्दी के मुस्लिम वृतान्तों में मिलता है। गोंड जनजाति राज्य-निर्माण का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है। मानवशास्त्री इन्हें प्राक्-द्रविड़ बताते हैं। इनकी त्वचा का रंग गहरा (श्याम वर्ण), चपटी नाक, मोटे होंठ, सीधे बाल तथा छोटा कद है। गोंडी तथा मात्री इनकी प्रमुख भाषा है, जो इण्डो-आर्य वर्ग से मिलती-जुलती है। ये लोग स्थानान्तरी कृषि करते हैं जिसे स्थानीय रूप से 'दिप्पा कृषि' कहा जाता है। यह असम की झूम कृषि जैसी है। ये लोग पहाड़ी ढालों पर सोपानी-खेत बनाकर भी कृषि करते हैं, जिसे पेंडा-कृषि कहा जाता है। वे खेतिहर मजदूर के रूप में भी काम करते हैं उनके कुछ उप-समूह मछली पकड़ने में लगे हुए हैं। गाँवों की गतिविधियाँ भी उनकी अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं। वे वनोपज संग्रह भी करते हैं।
4. असम को अपना नाम अहोम से मिला। एक जनजाति तेरहवीं शताब्दी से लेकर 1838 ई० में ब्रिटिश शासन की स्थापना तक असम के अधिकांश भागों पर शासन किया। अहोम लोगों का उद्गम चीन के युन्नान प्रान्त से माना जाता है। वे तेरहवीं

शताब्दी में असम चले गए। उन्होंने ऊपरी असम मैदान के स्थानीय सरदारों पर विजय प्राप्त की। दो शताब्दियों के बाद उन्होंने निचले असम पर ग्वालपाड़ा तक नियन्त्रण हासिल करने के लिए कोच, काचारी तथा स्थानीय शासकों को हराया। अहोम लोगों की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक असम में मुगलों के विस्तार को रोकना था। सन् 1671 ई० में गुवाहाटी के निकट अहोमों तथा मुगलों में युद्ध हुआ, जिसमें मुगलों की पराजय हुई। अहोमों की शक्ति एवं समृद्धि राजा रूप सिंह (1696-1714 ई०) के शासन-काल में शिखर पर पहुँच गई।

5. आदिवासियों के पास घनिष्ठ समुदाय होता है। वे आमतौर पर आत्मनिर्भर होते हैं और उन्हें अपने समुदाय के बाहर ज्यादा घुलने-मिलने की आवश्यकता नहीं होती है। सदियों से आदिवासी लोगों के शोषण के उदाहरण रहे हैं। सीधे-सादे होने के कारण उन्होंने स्वयं का शोषण होते पाया है और इसी कारण वे बाहरी लोगों पर आसानी से विश्वास नहीं करते और उन्हें संकोच की नजर से देखते हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

❑

6. धार्मिक मान्यताएँ

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) सफा 2. (a) गुरु अर्जुनदेव 3. (c) गुरु हरगोविन्द ने
4. (c) रामानन्द

(ख) 1. निर्गुण 2. चिश्ती 3. गुरु गोविन्द सिंह
4. खानकाह (आश्रम) 5. महाराष्ट्र

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (ii) 3. (iii) 4. (i)

(ङ) 1. सल्तनत युग के दौरान अनेक हिन्दू धार्मिक विचारकों तथा सुधारकों ने धार्मिक सुधारों के लिए आन्दोलन चलाया, जिसमें भक्ति पर बल दिया गया। इस आन्दोलन को भक्ति आन्दोलन कहा गया।

2. उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन को रामानुज के शिष्य रामानन्द ने लोकप्रिय बनाया।

3. गुरु नानक के भजनों को गुरुमुखी में गुरु अंगद ने संकलित किया।

4. गुरु नानक तीन सिद्धान्तों को मानते थे जिनमें जीवन का सार है। ये तीन सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—
(i) 'नाम जपो' अर्थात् ध्यान लगाओ, (ii) 'कीरत करो' अर्थात् मेहनत करो व ईमानदारी से अपनी आजीविका कमाओ, (iii) 'वंद छको' अर्थात् अपनी कमाई उनके साथ बाँटों जो आपसे कम भाग्यशाली हों।

(च) 1. कबीर निर्गुण भक्ति के संत थे। उन्होंने प्रेम तथा सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिए बल दिया। उन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की उनके विधि-विधानों के लिए समान रूप से आलोचना की। उन्होंने जाति-व्यवस्था और मूर्ति पूजा का विरोध किया। उन्होंने वेदों और कुरान तथा ब्राह्मणों और मुल्लाओं के प्रभुत्व को खारिज किया। उन्होंने दोहों के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार किया, जिनका आम आदमी पर बहुत प्रभाव पड़ा। उन्होंने उपदेश दिया कि भक्ति से ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

2. सन् 1699 ई० में उन्होंने एक महासभा बुलवाई और खालसा पंथ की स्थापना की। उन्होंने लोगों से धर्म की रक्षा के लिए आगे आने का आह्वान किया। सभा में से पाँच व्यक्ति उठकर आगे आए तथा धर्म के लिए अपना जीवन बलिदान करने की शपथ ली। गुरु ने उन्हें अमृत चखाकर दीक्षित किया। ये पाँच व्यक्ति पंच प्यारे कहलाए। गुरु ने अपने अनुयायियों के मार्गदर्शन के लिए आचरण के विशेष नियम बताए। सिखों के पाँच प्रतीक केश (लम्बे बाल), कंघा, कच्छ (कच्छों का एक जोड़ा), कड़ा (लोहे का कंगन) तथा कृपाण (तलवार) हैं। गुरु गोविन्द सिंह के लेखन को दशम ग्रन्थ के नाम से संकलित किया गया। गुरु गोविन्द सिंह के बाद गुरु की सांसारिक सत्ता का अन्त हो गया। सिख समुदाय का नेतृत्व खालसा पंथ और गुरु ग्रन्थ साहिब में निहित हो गया। गुरुद्वारा, संगत और पंगत प्रमुख सिख संस्थाएँ बन गईं।

3. सूफी शब्द अरबी भाषा के 'सफा' शब्द से बना है, जिसका अर्थ है—पवित्र। मुसलमान सन्तों द्वारा प्रतिपादित शुद्ध एवं त्यागपूर्ण जीवन ही सूफीवाद कहलाया।
सूफीवाद की शिक्षाएँ—सूफी सन्त व्रतों, विधि-विधानों में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने ईश्वर तक पहुँचने के लिए प्रेम तथा भक्ति पर बल दिया। उन्होंने उपदेश दिया कि ईश्वर एक तथा सर्वशक्तिमान है तथा सभी मनुष्य उसकी सन्तान हैं। ईश्वर को प्रेम करने का अर्थ—मानवता को प्रेम करना है। प्रार्थना, उपवास तथा विधि-विधान इतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम। भक्ति संगीत ईश्वर के निकट पहुँचने का एक मार्ग है। लोगों को पीर की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए, जो हिन्दुओं के गुरु के समकक्ष हैं। जाति या धर्म की कोई बाधा नहीं है और धर्म बदलने की भी कोई आवश्यकता नहीं है।

4. सिख धर्म के पाँच विशेष नियम निम्नलिखित हैं—
केश (लम्बे बाल), कंघा, कच्छ (कच्छों का एक जोड़ा), कड़ा (लोहे का कंगन) तथा कृपाण (तलवार) हैं।

5. अकबर एक ऐसा शासक था, जिसने धार्मिक सहिष्णुता का अभ्यास किया और सभी धर्मों का संरक्षण किया। वास्तव में उसने एक नए धर्म को विकसित किया, जिसे दीन-ए-इलाही कहा जाता है। उसमें सभी प्रमुख धर्मों के पहलू थे। अकबर ने उन सभी वैकल्पिक मार्गों का संरक्षण किया, जो धार्मिक सद्भाव और भाईचारे का प्रचार करते थे। भक्ति और सूफियों ने आम आदमी को आकर्षित करने के लिए धार्मिकता और सरल धार्मिक विश्वासों का सरल तरीके से प्रचार किया। सूफी-सन्त हिन्दुओं और मुसलमानों द्वारा समान रूप से पूजनीय थे और इस प्रकार

उन्होंने धार्मिक सद्भाव और भाईचारे को बढ़ावा दिया। अकबर स्वयं अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती का भक्त था। कबीर, रामानंद, रविदास, तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य, मीराबाई और गुरु नानक जैसे अधिकांश भक्ति और सूफी-सन्तों में 16वीं शताब्दी में उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में अकबर के शासनकाल के दौरान आन्दोलन का प्रचार किया और इसे लोकप्रिय बनाया। 16वीं शताब्दी में सूफी-संतों की दरगाहें और सिलसिला लोकप्रिय हुए और सभी पृष्ठभूमि के भक्तों को आकर्षित किया। इस प्रकार अकबर का शासनकाल भक्ति और सूफी आन्दोलनों का चरम बिंदु था।

कीजिए और सीखिए

(छ) हाँ, इस दोहे में कबीर जी जो कहते हैं, उससे मैं पूरी तरह सहमत हूँ। इस दोहे में कबीर जी अपनी सरल किन्तु गतिशील शैली में मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे बड़े साहस के साथ कहते हैं कि हम बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ने के बावजूद ज्ञानी नहीं बन सकते। यदि हम प्रेम को पढ़े, उसकी भाषा समझें और प्रेममय बनें, तभी हम पर उसके प्रभुत्व का उदय होगा और तभी जीवन जीने लायक होगा। आज की दुनिया में ऐसा लगता है कि हर कोई सब कुछ जानता है फिर भी सच्चाई यह है कि इतनी जानकारी होने के बावजूद कोई जागरुक नहीं है और न ही हम शान्त हैं।

❑

7. प्रादेशिक संस्कृतियों का पल्लवन

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) चित्रों का संग्रह 2. (a) भरतनाट्यम 3. (a) बंगाली

(ख) 1. भक्तिमय 2. प्राचीन बंगाली
3. अमीर खुसरों तथा गोपाल नायक
4. अमीर खुसरो 5. भरतनाट्यम

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (ii) 3. (v) 4. (iii) 5. (i)

(ङ) 1. दक्षिण भारतीय भाषाओं में तमिल भाषा का साहित्य सबसे पुराना है।
2. बुरञ्जी गद्य में लिखे गए वृत्तान्त हैं, जो बर्मा के अहोमों द्वारा असम में लाए गए।
3. राजपूत चित्रकला की दो नई शैलियों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) राजस्थानी शैली (ii) पहाड़ी (काँगड़ा) शैली
4. भारत के शास्त्रीय नृत्य का प्रमुख स्रोत भरतमुनि का नाट्यशास्त्र है, जो नाट्य की उत्पत्ति तथा कार्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है।
5. भारत के दो मुखौटा नृत्यों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) कश्मीर के लद्दाख क्षेत्र का याक नृत्य (ii) उड़ीसा के मयूरभंज जिले का छऊ नृत्य।

(च) 1. सन् 1000 ई० के आसपास बंगाली भाषा (बांग्ला), उड़िया तथा असमी के साथ विकसित हुई। प्राचीन बंगाली भाषा के नमूने चार्यपद गीतों में पाए जाते हैं, ये 950-1200 ई० के दौरान कुछ महायान शिक्षकों द्वारा लिखे गए थे, जिन्हें सिद्ध कहा जाता था। उनकी विषय-वस्तु भक्ति सन्तों तथा विचारकों की रचनाओं के समकक्ष हैं। बंगाली काव्य प्रधानत: तीन विधाओं में लिखे गए—(i) मंगल काव्य (ii) महाकाव्य (iii) पदावलि। कृत्तिवास की रामायण, जिसकी रचना पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में की गई, महाकाव्य का एक उदाहरण है। चण्डीदास ने बंगाली भाषा में लगभग 1250 कविताएँ (पदावली) लिखीं, जो राधा-कृष्ण के प्रेम से सम्बन्धित हैं। उन्हें रविन्द्रनाथ टैगोर से पहले का महानतम गीतकार माना जाता है। इससे पहले जयदेव ने बारहवीं शताब्दी में गीत गोविन्द की रचना की थी। अलावल, एक उत्कृष्ट मुस्लिम कवि ने 1648 ई० में पद्मावती की रचना की। मुगल काल में बंगाली साहित्य चैतन्य के वैष्णव आन्दोलन से बहुत प्रभावित हुआ। संस्कृत तथा बंगाली में चैतन्य की अनेक जीवन-कथाएँ लिखीं गई थीं।

2. मुगल चित्रकला अकबर के शासनकाल में विकसित हुई थी। हमज़ानामा सौ पृष्ठों वाले चौदह विशाल ग्रन्थों का संग्रह है। बसावन तथा दशवन्त अकबर के शासनकाल के प्रमुख कलाकार थे। जहाँगीर के शासनकाल में मुगल शैली पराकाष्ठा पर पहुँच गई। इस काल के प्रमुख चित्रकार बिशनदास, अबू-अल-हसन, मनोहर, गोवर्द्धन, बालचन्द, बिचित्र तथा मिस्किन थे। शाहजहाँ के शासनकाल में भी चित्रकला का विकास जारी रहा। औरंगजेब के शासनकाल में शाही संरक्षण के अभाव में चित्रकला का ह्रास हो गया।

3. **(i) सामाजिक लोक नृत्य**—(i) राजस्थान का घूमर नृत्य (ii) पंजाब का भाँगड़ा नृत्य।

   (ii) मुखौटों वाला नृत्य—(i) लद्दाख का याक नृत्य (ii) उड़ीसा के मयूरभंज जिले का छऊ नृत्य।

   (iii) धार्मिक लोक नृत्य—(i) महाराष्ट्र के दीदी तथा काला नृत्य (ii) गुजरात का गरबा नृत्य।

   (iv) सामरिक रूप नृत्य—(i) मणिपुर का थाँगटा नृत्य (ii) उत्तराखण्ड का छोलिया नृत्य।

4. बंगाल में पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से ही मन्दिर निर्माण की होड़ देखी गई, जिसका समापन उन्नीसवीं शताब्दी में हुआ। ऐसे व्यक्तियों या समूह द्वारा जो शक्तिशाली हो रहे थे और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने और अपनी धर्मपरायण्ता का प्रचार करने के लिए इन मन्दिरों और अन्य धार्मिक संरचनाओं को बनाया गया था।

   मन्दिरों में स्थानीय देवताओं को रखा गया था जिन्होंने ब्राह्मणों की मान्यता प्राप्त की थी। कई मामूली ईंट और टेराकोटा मंदिरों को कई निम्न सामाजिक समूहों, जैसे कोलू (तेल प्रेसर) और कंसारी (घण्टी धातु कार्यकर्त्ता) के समर्थन से बनाया गया था। यूरोपीय व्यापारिक कम्पनियों के आने से नए आर्थिक अवसर पैदा हुए थे, इन

सामाजिक समूहों से जुड़े कई परिवारों ने अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार कर इसका लाभ उठाया। जैसे, उन्होंने मन्दिरों का निर्माण करके अपनी स्थिति का बखान किया।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) 1. कोटा (KOTA) 2. कम्बन (KAMBAN)
3. कव्वाली (QAWWALI) 4. नवरत्न (NAVRATTAN)
5. जहाँगीर (JAHANGIR) 6. गालिब (GHALIB)
7. बहज़ाद (BAHZAD) 8. कथक (KATHAK)
9. कीर्तन (KIRTANA) 10. कल्हण (KALHANA)

❑

8. अठारहवीं शताब्दी में स्वतन्त्र राज्यों का उदय

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (c) बाजीराव प्रथम ने 2. (c) गुरु हरगोविन्द के नेतृत्व में
3. (c) श्रीरंगपट्टम

(ख) 1. मुहम्मद शाह 2. बालाजी विश्वनाथ 3. चिन किलिच खाँ
4. सूरजमल

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✗)

(घ) 1. (v) 2. (i) 3. (ii) 4. (iii) 5. (iv)

(ङ) 1. शिवाजी महान और शक्तिशाली मराठा शासक थे। वह बीजापुर राज्य के एक छोटे जागीरदार शाहजी भौंसले के पुत्र थे। उन्होंने मराठों की पहाड़ी जातियों को एक सैन्य शक्ति के रूप में गठित किया। उनकी भारत में एक शक्ति-सम्पन्न हिन्दू राज्य स्थापित करने की महत्त्वाकांक्षा थी।

2. मैसूर के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना हैदर अली ने की थी।

3. हैदराबाद के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना चिन किलिच खाँ, जो मुगल सम्राट मुहम्मद शाह का मन्त्री था, ने की थी।

4. अवध सन् 1722 ई० में ईरानी (फारसी) शिया सादात खाँ के नेतृत्व में स्वतन्त्र हुआ।

(च) 1. मराठा बहादुर तथा बलशाली योद्धा थे। उन्हें मराठी भक्ति साहित्य से बहुत प्रेरणा मिली थी तथा सैन्य प्रशिक्षण ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न की। शिवाजी के नेतृत्व में वे शक्तिशाली भी बन गए। भारत में 18वीं सदी में मराठा सबसे ताकतवर शक्ति बनकर उभरे। राजनीतिक क्षेत्र में उनकी श्रेष्ठता को बाद के मुगलों ने

खुलकर स्वीकार किया। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में छत्रपति शिवाजी ने मराठों को और अधिक शक्तिशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिवाजी ने मराठा पहाड़ी जनजातियों को एक सैन्य शक्ति के रूप में संगठित किया। इस समय बीजापुर राज्य का लगभग पतन हो चुका था। शिवाजी ने अनेक दुर्गों पर कब्जा कर लिया। उनकी बढ़ती हुई शक्ति ने उन्हें बीजापुर राज्य तथा दक्कन के मुगल सूबेदार का दुश्मन बना दिया। युद्धों का एक लम्बा सिलसिला चला। शिवाजी ने बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को मार डाला। औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए अपने मामा शाइस्ता खाँ को भेजा। शिवाजी ने उसके आदमियों को मार डाला, किन्तु शाइस्ता खाँ बच गया। इससे क्रुद्ध होकर औरंगजेब ने अम्बर (आमेर) के राजा जयसिंह को शिवाजी को अधीन करने के लिए भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को औरंगजेब के दरबार में जाने के लिए राजी किया, जहाँ उनका अपमान किया गया, उन्हें पकड़कर कैद कर लिया गया। शिवाजी अपनी चतुराई से कारागार से भागने में सफल रहे। उन्होंने मुगलों के खिलाफ अपनी गतिविधियों को फिर से शुरू किया। उन्होंने सूरत को लूटा और स्वयं को सम्राट घोषित किया। सन् 1674 ई० में पुणे के पास रायगढ़ में आयोजित एक भव्य दरबार में उन्हें छत्रपति के रूप में ताज पहनाया गया। इस प्रकार उन्होंने मराठा राज्य की नींव रखी।

2. अठारहवीं सदी में निम्नलिखित राज्य अस्तित्व में आए—
   (i) अठारहवीं शताब्दी के अन्त में महाराणा रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिखों ने पंजाब में एक सम्प्रभुता-सम्पन्न राज्य की स्थापना की।
   (ii) मेवाड़, मारवाड़ और अम्बर के तीन मुख्य राजपूत राज्यों ने अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की। उनके शासक राणा अमर सिंह (मेवाड़), अजीत सिंह (मारवाड़) और सवाई राजा जयसिंह (अम्बर) थे।
   (iii) बदन सिंह (1722-1756 ई) ने भरतपुर के एक नए शासक घराने की नींव रखी। उसे 1752 ई० में राजा की उपाधि मिली।
   (iv) अवध 1722 ई० में सादात खाँ के नेतृत्व में स्वतन्त्र हुआ।
   (v) बंगाल मुर्शिद कुली खाँ के अधीन एक स्वतन्त्र राज्य बन गया। सन् 1717 ई० में उसे बंगाल का गवर्नर बनाया गया।
   (vi) मैसूर 1761 ई० में हैदर अली के अधीन एक स्वतन्त्र राज्य बना।
   (vii) सन् 1724 ई० में चिनकिलिच खाँ ने हैदराबाद राज्य की स्थापना की तथा निजाम-उल-मुल्क आसफजाह की उपाधि धारण की।
   (viii) छत्रपति शिवाजी ने 1674 ई० में मराठा राज्य की नींव रखी। बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई०) के अधीन मराठा सत्ता के शिखर पर पहुँचे।

3. गुरु हरगोविन्द (1606-1645 ई०) के नेतृत्व में सिख एक सैन्य समुदाय बनकर उभरे। दसवें और अन्तिम गुरु गोविन्द सिंह (1664-1708 ई०) ने सिखों को 1699 ई० में खालसा के रूप में संगठित किया। गुरु गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद बन्दा बहादुर (1708-1716 ई०) सिखों का नया नेता बना। उसने सिखों को

संगठित किया तथा सतलज और यमुना नदियों के मध्यवर्ती क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। उसने एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने की कोशिश की, लेकिन वह मुगलों द्वारा बन्दी बना लिया गया। उसे और उसके अनुयायियों को दिल्ली लाया गया और यातनाएँ देकर मार डाला गया। सिखों की सैन्य शक्ति कमजोर हो गई थी, किन्तु पूरी तरह नष्ट नहीं हुई थी। वे स्वयं को एक सिख राज्य के रूप में संगठित करने लगे। नादिरशाह तथा अहमदशाह अब्दाली के आक्रमणों के बाद पंजाब में व्याप्त अव्यवस्था तथा अराजकता ने सिखों को एक महान शक्ति के रूप में उभरने में सहायता की। सन् 1764 ई० में सिखों ने पंजाब में अपनी प्रभुसत्ता की घोषणा कर दी। उन्होंने स्वयं को बारह मिस्लों में संगठित किया तथा नाभा, कपूरथला, पटियाला आदि जागीरें स्थापित कीं। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में महाराणा रणजीत सिंह के नेतृत्व में सिखों ने पंजाब में एक सम्प्रभुता-सम्पन्न राज्य की स्थापना की।

4. हैदर अली के नेतृत्व में मैसूर एक स्वतन्त्र राज्य बना। अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में मैसूर राज्य पर चिक्का कृष्णराजा का शासन था, जो अपने मन्त्रियों नन्दराजा तथा देवराजा के हाथों की कठपुतली था। हैदर अली ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत मैसूर की सेना के एक छोटे-से अधिकारी के रूप में की। अपनी योग्यता, कुशलता, कूटनीति तथा साहस के बल पर वह 1755 ई० में डिण्डीगुल का फौजदार बन गया। उसने एक स्वतन्त्र सेना बना ली तथा 1761 ई० में नन्दराजा तथा देवराजा को अपदस्थ करके मैसूर में अपनी सत्ता स्थापित कर ली। बाद में उसने बेदनूर तथा कनारा को भी जीत लिया तथा श्रीरंगपट्टम में अपनी राजधानी स्थापित की। उसने अपनी स्वतन्त्रता बनाए रखने के लिए निजाम तथा मराठों में युद्ध किया। अन्ततः वह अंग्रेजों से पराजित हुआ तथा 1782 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

   टीपू सुल्तान (1782-1799 ई०) अपने पिता हैदर अली का उत्तराधिकारी बना। वह भी अपने क्षेत्रों पर अधिकार बनाए रखने के लिए वीरतापूर्वक अंग्रेजों से लड़ा। वह पहला भारतीय शासक था, जिसने प्रशासन तथा युद्ध-कला में पाश्चात्य प्रणाली को अपनाया।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

9. पर्यावरण के घटक

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) पौधे 2. (b) भूमि

(ख) 1. अजैव, जैव 2. प्राकृतिक, सांस्कृतिक 3. पेड़-पौधे, जीव-जन्तु 4. प्रकृति

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (ii) 4. (i)

(ङ) 1. वे भौतिक तथा जैविक दशाएँ, जिनमें कोई जीवधारी निवास करता है, सामूहिक रूप से पर्यावरण कहलाती हैं।

2. पर्यावरण के प्रमुख परिमण्डल निम्नलिखित हैं—
(i) वायुमण्डल, (ii) स्थलमण्डल, (iii) जलमण्डल, (iv) जैवमण्डल

3. वायुमण्डल गैसों का वह आवरण है, जो पृथ्वी को घेरे हुए है। यह मण्डल अत्यधिक गतिशील है।

4. किसी विशेष क्षेत्र में जीवों तथा उनके भौतिक वातावरण में परस्पर क्रियाओं की जटिल प्रणाली ही पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता है। पारिस्थितिकी तंत्र में विशाल विविधता होती है। यह वर्षा, वन, घसियाले, मैदान, मरुस्थल व झील जितने विशाल भी हो सकते हैं और तालाब जितने छोटे भी हो सकते हैं।

5. पृथ्वी पर पौधों और जानवरों की प्रजातियों की विस्तृत श्रृंखला जैव विविधता कहलाती है। यहाँ पिछले लाखों वर्षों के दौरान जीवन रूप विकसित और विविधतापूर्ण हुआ है। विविधीकरण की इस प्रक्रिया ने पौधों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियों को जन्म दिया है।

6. वायुमण्डल हमारे लिए इसलिए उपयोगी है क्योंकि यह हमें जीवित रहने के लिए आवश्यक गैसें प्रदान करता है। वातावरण (मौसम) के विभिन्न तत्त्व जैसे—तापमान, वायुदाब, हवाएँ, आर्द्रता आदि प्राकृतिक प्रक्रियाओं जैसे—मिट्टी का निर्माण, प्राकृतिक वनस्पति और जन्तु जीवन को प्रभावित करते हैं।

(च) 1. हम प्राकृतिक पर्यावरण का अध्ययन इसलिए करते हैं क्योंकि यह हमारी मूलभूत जीवन रक्षक प्रणाली है। यह हमें हवा, पानी, भोजन आदि प्रदान करता है जो हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है। पर्यावरण हमें कई उपयोगी संसाधन प्रदान करता है, जैसे—लकड़ी, ईंधन, खनिज, ऊर्जा आदि। मनुष्य की आर्थिक गतिविधियाँ प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं, इसका अध्ययन हमें यह जानने में सक्षम बनाता है कि मानव गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण को होने वाली क्षति या गिरावट को किस प्रकार रोक सकें और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए इसकी रक्षा कर सकें। यदि हम अपने संसाधनों के तर्कहीन उपयोग पर रोक नहीं लगाते हैं तो मानव जाति के लिए इसके परिणाम गंभीर होंगे।

2. पर्यावरण प्राकृतिक भी हो सकता है और सांस्कृतिक भी। प्राकृतिक पर्यावरण प्रकृति द्वारा निर्मित होता है और इसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र की जलवायु, मृदा, पौधे, जन्तु आदि आते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के दो आधारभूत अंग या कारक होते हैं—अजैव तथा जैव। अजैव कारकों में सूर्य का प्रकाश, हवा, पानी, मिट्टी, नमी आदि सम्मिलित हैं जबकि जैव कारकों में पेड़-पौधे तथा जीव-जन्तु आदि सम्मिलित होते हैं।

दूसरी ओर सांस्कृतिक या मानव निर्मित पर्यावरण में वे सभी कारक या विशेषताएँ सम्मिलित होती हैं जो मानव ने बनाए हैं। इस प्रकार मकान, सड़के, खेत, कारखानें, संचार के साधन आदि सांस्कृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं।

3. हम मनुष्य अपनी विभिन्न आर्थिक गतिविधियों से पर्यावरण को प्रभावित करते हैं। हमारे राष्ट्रीय संसाधनों जैसे—जंगलों, चरागाहों, कृषि भूमि और खनिजों के तर्कहीन उपयोग ने पहले ही पर्यावरण को नुकसान पहुँचाया है। प्रारंभ में मनुष्य अपने अस्तित्व के लिए पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर था। बाद में उसने अपने बुद्धि कौशल से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए अपने पर्यावरण में अनेक संशोधन तथा परिवर्तन किए। शिकार और भोजन संग्रह करने के बजाए उसने अपना भोजन उगाना शुरू कर दिया। उसने कृषि करने के लिए जंगलों को साफ किया, उसके बाद में उसने खनन शुरू किया और उद्योग स्थापित किए। इस प्रक्रिया में उसने अपने प्राकृतिक वातावरण को बदल दिया। कुल मिलाकर मानवीय गतिविधियों ने प्राकृतिक पर्यावरण को अस्त-व्यस्त कर दिया है, जिसके कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण और भूमि क्षरण आदि का जन्म हुआ।
4. हमें निम्नलिखित कारणों से पर्यावरण की रक्षा करने की आवश्यकता है—
   (i) पर्यावरण हमारे जीवन की आधारभूत व्यवस्था है। यह हमें जीने के लिए वायु, जल तथा भोजन प्रदान करता है, जो हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं।
   (ii) पर्यावरण हमें लकड़ी, ईंधन, खनिज तथा ऊर्जा जैसे उपयोगी संसाधन प्रदान करता है।
   (iii) मानव की समस्त आर्थिक क्रियाओं ने पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।
   (iv) वन, चरागाह, खेतिहर भूमि तथा खनिजों जैसे प्राकृतिक संसाधनों के तर्कहीन उपयोग से पर्यावरण का बहुत विनाश हुआ है।
   (v) यदि हम अपने संसाधनों का तर्कहीन उपयोग बन्द नहीं करते हैं तो सम्पूर्ण मानवता को गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे।
5. हाँ, दिया गया कथन सत्य है क्योंकि वायुमण्डल के बिना पृथ्वी पर जीवन असंभव होगा। ऑक्सीजन नहीं होगी और साँस लेना संभव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सूर्य की पराबैंगनी किरणें सीधे वातावरण में प्रवेश करेंगी क्योंकि इनसे बचाव का कोई सुरक्षा कवच नहीं होगा।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

❑

10. स्थलमण्डल : भूमि का परिमण्डल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) आग्नेय शैल 2. (d) ग्रेनाइट 3. (a) संगमरमर
4. (a) अन्तरतम 5. (c) अवसादी शैलों में 6. (d) माइका

(ख) 1. अन्तरतम 2. आग्नेय 3. माउण्ट एवरेस्ट, मेरियाना ट्रेंच
4. हीरा

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (iv) 2. (iii) 3. (v) 4. (ii) 5. (i)

(ङ) 1. पृथ्वी की तीन परतों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) भूपटल (ii) मैण्टल (iii) अन्तरतम

2. शैल (चट्टान) दो या दो से अधिक खनिजों का एक सघन द्रव्यमान है।

3. कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस अवसादी शैलों में ही पाए जाते हैं। ये खनिज कार्बनिक मूल के हैं और इसलिए इन्हें जीवाश्म ईंधन कहा जाता है। ये जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

4. पृथ्वी की प्रमुख छह प्लेटों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) अफ्रीकन प्लेट (ii) अमेरिकन प्लेट (iii) अंटार्कटिका प्लेट (iv) आस्ट्रेलियन प्लेट (v) यूरेशियन प्लेट (vi) प्रशान्त प्लेट

5. कायान्तरित शैलों का निर्माण कायान्तरण प्रक्रिया द्वारा होता है, जिसका अर्थ है—आकृति में परिवर्तन। आग्नेय तथा अवसादी शैलों का अत्यधिक ऊष्मा तथा दबाव के कारण उनके गुणों, स्वरूप और चरित्र में कायान्तरण हो जाता है।

6. शैल (चट्टान) और खनिज हमारे लिए निम्नलिखित प्रकार से उपयोगी हैं—
(i) मिट्टी का निर्माण शैलों (चट्टानों) से होता है।
(ii) प्राचीन समय में शैलों का उपयोग औजार तथा हथियार बनाने में होता था।
(iii) सड़के, इमारतें व मकान बनाने में शैलों का विस्तृत उपयोग होता है।
(iv) अवसादी शैलों में पाए जाने वाले रसायनों से खाद बनाई जाती है।
(v) कोयला व पैट्रोलियम जैसे खनिज ऊर्जा के स्रोत होते हैं।

(च) 1. मैण्टल तथा अन्तरतम की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—
मैण्टल भूपटल के नीचे 35 किमी से लेकर 2,900 किमी की गहराई तक विस्तृत है। यह सघन तथा दृढ़ शैलों से बना है और इसमें मैग्नीशियम तथा लोहे जैसे खनिजों की अधिकता है। मैण्टल के ऊपरी भाग को दुर्बलतामण्डल कहते हैं, जो लचीली तथा आंशिक रूप से पिघली अवस्था वाली प्लास्टिक परत है, किन्तु इसका निचला भाग ठोस है।
पृथ्वी के केन्द्रीय भाग को अन्तरतम कहते हैं। इसमें अत्यन्त सघन निकिल तथा लोहे की प्रधानता होने के कारण यह परत नाइफ (NIFE) कहलाती है। यहाँ 2,700°C तक तापमान अनुमानित है। अन्तरतम का घनत्व 9.5 से 14.5 तक या कहीं-कहीं इससे भी अधिक है।

2. अवसादी शैलों का निर्माण पहले से मौजूद चट्टानों से प्राप्त अवसादों से होता है। ये स्तरित क्रम में जमा होते हैं जो बाद में ठोस हो जाते हैं। ये शैलें समुद्र, झीलों, जलधाराओं, हिमनदी और हवाओं द्वारा बिछाई जाती हैं। दबाव के कारण तलछट की ये परतें आपस में दब जाती हैं और आपस में चिपक जाती हैं बालुका पत्थर और शेल अवसादी शैलों के उदाहरण हैं।

3. आग्नेय शैलों का निर्माण मैग्मा के ठण्डा होकर जमने से होता है। आग्नेय शैल दो प्रकार की होती हैं—अन्तर्वर्ती और बाह्य। अन्तर्वर्ती शैलें पृथ्वी के नीचे अधिक गहराई पर मैग्मा के विविध रूप में ठोस होने से बनती हैं। गेब्रो अर्न्तवर्ती शैल का उदाहरण है। बाह्य शैल पृथ्वी की सतह पर मैग्मा के ठोस होने से बनती हैं। बेसाल्ट बाह्य शैल का उदाहरण है।
4. पृथ्वी का आन्तरिक भाग और रचना लम्बे समय से ही रहस्यमय तथा विवादास्पद रहे हैं। आज हमें पृथ्वी के बेधन तथा ज्वालामुखी एवं भूकम्प जैसे अप्रत्यक्ष साक्ष्यों के आधार पर पृथ्वी की संरचना के बारे में अत्यधिक जानकारी प्राप्त हो चुकी है। ज्वालामुखी उद्‌गारों से संकेत मिलता है कि पृथ्वी का आन्तरिक भाग अभी भी गर्म तथा तरल अवस्था में है। हालाँकि भूकम्प विज्ञान पृथ्वी की आन्तरिक रचना के बारे में हमारी जानकारी का सबसे प्रामाणिक स्रोत है। भूकंपीय तरंगें पृथ्वी के अन्दर स्थित उद्‌गम केन्द्र से उत्पन्न होती हैं। भूकंप की घटना के दौरान उत्पन्न इन भूकंपीय तरंगों का व्यवहार पृथ्वी की संरचना के बारे में सबसे प्रामाणिक प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।
5. तीनों प्रकार की शैलों का निर्माण निरन्तर चलता रहता है तथा वे एक रूप से दूसरे रूप में बदलती रहती है; इसे शैल चक्र कहते हैं। जब आग्नेय तथा कायान्तरित शैलें धरातल पर अनावृत होती हैं तब वे अपक्षयित और अपरदित होती जाती हैं। यह टूटा-फूटा पदार्थ नदियों, हवा, हिमानियों, लहरों आदि साधनों द्वारा स्थानान्तरित कर दिया जाता है तथा स्तरित रूप में बिछा दिया जाता है, जो अवसादी शैलों का निर्माण करता है। जब अवसादी तथा आग्नेय शैलों में ताप और दबाव से परिवर्तन होता है तब वे कायान्तरित शैलों में बदल जाती हैं। इस प्रकार शैल परिवर्तन का चक्र चलता रहता है।
6. पृथ्वी के आन्तरिक भाग के बारे में हमें प्रत्यक्ष जानकारी नहीं मिल पाती है क्योंकि अत्यधिक उच्च तापमान के कारण कोई भी व्यक्ति पृथ्वी की गहराई में नहीं जा सकता है, इसलिए पृथ्वी की सतह का केवल एक तिहाई भाग अध्ययन के लिए ड्रिल किया जाता है। पृथ्वी के आंतरिक भाग के बारे में अधिकांश जानकारी अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होती है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

❑

11. पृथ्वी की गतियाँ एवं प्रमुख स्थलरूप

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) वलित पर्वत 2. (c) वलित पर्वत 3. (a) अपनति
4. (b) सक्रिय 5. (b) ब्लॉक पर्वत

(ख) 1. रिक्टर मापक 2. 2001 3. वलितपर्वत
4. फ्यूजियामा 5. क्रेटर

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (v) 3. (iv) 4. (iii) 5. (i)

(ङ) 1. पर्वतों के प्रमुख प्रकारों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) वलित पर्वत, (ii) ब्लॉक पर्वत, (iii) ज्वालामुखी पर्वत, (iv) अवशिष्ट पर्वत

2. प्रशान्त महासागर के चारों ओर गोलाकार बेल्ट जिस पर सबसे अधिक सक्रिय ज्वालामुखी पाए जाते हैं, प्रशान्त अग्नि वलय कहलाता है।

3. भूमि का वह भाग, जो दो या अधिक समानान्तर भ्रंशों के मध्य अवस्थित हो, भ्रंश घाटी कहलाती है।

4. दो या अधिक समानान्तर भ्रंशों के मध्य ऊँचा उठा हुआ भाग भ्रंशोत्थ कहलाता है।

5. वलन का ऊपरी उठा हुआ भाग अपनति कहलाता है।

6. शैलों की अचानक गतियों तथा टूटने के फलस्वरूप पृथ्वी के धरातल का अचानक हिलना या काँपना भूकम्प कहलाता है।

7. पृथ्वी की प्रमुख भूकम्प पेटियों के नाम निम्नलिखित हैं—

(i) परिप्रशान्त महासागरीय पेटी—परिप्रशान्त महासागरीय पेटी में उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका व पूर्वी एशिया के तटीय क्षेत्र आते हैं।

(ii) मध्य महाद्वीपीय पेटी—मध्य महाद्वीपीय पेटी में आल्पस पर्वत, भूमध्यसागर, उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका तथा हिमालय पर्वत आते हैं।

(iii) मध्य अटलांटिक पेटी—इसमें मध्य अटलांटिक व आसपास के द्वीप आते हैं।

(च) 1. सामान्यत: लोग ऐसा सोचते हैं कि ज्वालामुखी एक पर्वत होता है, जिससे लावा तथा अग्नि की ज्वालाओं का उद्‌गार होता है, किन्तु वास्तव में ज्वालामुखी में एक छिद्र या भूपटल में एक मुख होता है, जिससे लावा, गैसें, भाप तथा ठोस चट्टानें बाहर निकलती हैं। कभी-कभी लावा भूपटल की एक गहरी दरार से बाहर आता है। इस प्रकार बाहर निकला द्रव्य मैग्मा मुख के चारों ओर एकत्रित हो जाता है तथा बाद में ठण्डा होकर ज्वालामुखी पर्वत बनता है। ज्वालामुखी की एक विशिष्ट आकृति होती है जिसका एक क्रेटर, ग्रीवा (नलिका) तथा शंकु होता है।

2. ज्वालामुखी यो विभिन्न प्रकार के होते हैं। उनकी गतिविधि के आधार पर तीन प्रकार के ज्वालामुखियों की पहचान की गई है।

(i) सक्रिय ज्वालामुखी—ये ज्वालामुखी सदैव सक्रिय रहते हैं। विश्व में 500 से भी अधिक सक्रिय ज्वालामुखी हैं। इनमें से अधिकांश प्रशान्त महासागर के किनारे एक वलयाकार पेटी में स्थित हैं, जिसे अग्नि वलय कहा जाता है। सिसली में माउण्ट एटना, जापान में फ्यूजीयामा तथा भारत में बैरन द्वीप (बंगाल की खाड़ी) सक्रिय ज्वालामुखी के कुछ उदाहरण हैं।

(ii) सुप्त ज्वालामुखी—ये वे ज्वालामुखी हैं जिनमें अतीत काल में उद्‌गार हुआ था। अब वे शान्त हैं, किन्तु उनमें कभी भी उद्‌गार हो सकता है। इटली में विसूवियस सुप्त ज्वालामुखी का उत्तम उदाहरण हैं। ये ज्वालामुखी बहुत हानिकारक होते हैं; क्योंकि ये भ्रामक होते हैं। इनमें कभी भी विस्फोट हो सकता है तथा लोगों को उसकी चेतावनी भी नहीं मिलती है। विसूवियस ज्वालामुखी में सर्वप्रथम 79 ई० में उद्‌गार हुआ था तथा यह 1700 वर्षों तक सुप्त अवस्था में रहा।

(iii) मृत ज्वालामुखी—ये वे ज्वालामुखी हैं, जिनका सुदूर अतीत में उद्‌गार हुआ था, किन्तु अब वे सक्रिय नहीं हैं।

3. यद्यपि भूकम्प मात्र कुछ सेकण्ड के लिए आता है, फिर भी यह पृथ्वी पर सर्वाधिक शक्तिशाली शक्तियों में गिना जाता है। एक तीव्र भूकम्प से इतनी ऊर्जा बाहर निकलती है, जो परमाणु बम की ऊर्जा से 10,000 गुना अधिक होती है। भूकम्प के विनाशकारी प्रभाव निम्नलिखित हैं—
   (i) इमारतें, सड़कें, पुल तथा अन्य संरचनाएँ क्षतिग्रस्त तथा नष्ट हो जाती हैं।
   (ii) बिजली के तारों में आग लगने से भयंकर हानि होती है।
   (iii) खतरनाक रसायनों के बिखरने से भी बहुत हानि होती है।
   (iv) जन-जीवन की बहुत हानि होती है।
   (v) नदियों के मार्ग बदल जाते हैं।
   (vi) पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलनों से हानि होती है।
   (vii) अध:सागरीय भूकम्पीय तरंगें, जिन्हें सुनामी कहा जाता है; अत्यन्त हानिकारक होती है।
4. गति करने के तरीके के आधार पर विभिन्न प्रकार की भूकंपीय तरंगें निम्नलिखित हैं—

(i) प्राथमिक तरंगें—प्राथमिक तरंगें (पी तरंगें) या दाब तरंगें सबसे पहले आती हैं क्योंकि वे सबसे तेज होती हैं। ये तरंगें आमतौर पर लगभग छह किमी प्रति सेकंड से गति करती रहती हैं। ये तरंगें अपेक्षाकृत छोटे विस्थापन का कारण बनती हैं।

(ii) द्वितीयक तरंगें—द्वितीयक तरंगें (एस तरंगें) या कंपन तरंगें आने वाली अगली तरंगें हैं। इनकी गति की दर पी० तरंगों से कम होती हैं। ये तरंगें एक तीव्र प्रकंपन क्रिया उत्पन्न करती हैं। वे तरल माध्यम से नहीं गुजरते हैं।

(iii) धरातलीय तरंगें—यह तरंगें सबसे अन्त में आती हैं और पृथ्वी के धरातल पर गति करती हैं। यह सबसे शक्तिशाली और सबसे अधिक विनाशकारी होती हैं। इनका प्रभाव गहराइयों में नहीं होता।

5. यदि हम संसार में ज्वालामुखियों के वितरण को दर्शाने वाले मानचित्र को देखें तो इससे तुरन्त स्पष्ट हो जाएगा कि ज्वालामुखी पृथ्वी की सतह पर बेतरतीब ढंग से वितरित नहीं होते हैं, बल्कि वे अच्छी तरह से परिभाषित पेटी में पाए जाते हैं। ये

पेटी पृथ्वी की भूपटल में कमजोरी की प्रमुख रेखाओं से मेल खाते हैं और ये भूकंप क्षेत्र भी होते हैं। इन कमजोर क्षेत्रों की विशेषता युवा वलित पर्वत भी हैं।
इसके अतिरिक्त, ज्वालामुखी प्लेट सीमाओं से भी जुड़े हुए हैं। ज्वालामुखी महाद्वीपों और महासागरों के मिलन क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं, हालांकि कई बिखरे (छितराए) हुए ज्वालामुखी हैं जो इन पेटियों के बाहर हैं और इन वलन पेटियों से कोई संबंध नहीं है और जो कोई रेखीय व्यवस्था नहीं दिखाते हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। **(ज)** स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

❑

12. वायुमण्डल : वायु का परिमण्डल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) जलवाष्प का जल में 2. (c) जीवाश्म ईंधन का जलना
3. (b) आयनमण्डल 4. (a) ओजोन

(ख) 1. विपरीत-व्यापारिक पवनें 2. नाइट्रोजन 3. पवन विमुख
4. कार्बन डाई-ऑक्साइड।

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (ii) 4. (v) 5. (i)

(ङ) 1. वायुमण्डल की प्रमुख गैसों के नाम निम्नलिखित हैं—
नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, आर्गन तथा कार्बन-डाइ-ऑक्साइड।

2. वायुमण्डल की प्रमुख परतों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) क्षोभमण्डल (18 किमी तक), (ii) समतापमण्डल (19-50 किमी), (iii) मध्यमण्डल (51-80 किमी), (iv) तापमण्डल (80-100 किमी)

3. वायुमण्डल में उपस्थित जलवाष्प को वायुमण्डलीय आर्द्रता कहते हैं।

4. चक्रवात एक पवन-प्रणाली है, जिसका दाब न्यून तथा केन्द्र बाह्य रूप से उच्च दाब युक्त होता है।

5. वर्षा के विभिन्न स्वरूपों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) संवाहनिक वर्षा (ii) पर्वतीय वर्षा (iii) चक्रवातीय वर्षा।

(च) 1. **(i) क्षोभमण्डल**—यह वायुमण्डल की सबसे निचली परत होती है। इसमें वायुमण्डल के कुल द्रव्यमान का 90% शामिल है। यह भूमध्य रेखा पर 18 किमी की ऊँचाई पर और ध्रुवों के पास 8 किमी की ऊँचाई पर होने वाली क्षोभसीमा तक फैली हुई है। इस परत में, ऊँचाई में प्रति 100 मीटर की वृद्धि में 0.6 डिग्री सेल्सियस की औसत दर से तापमान में लगातार कमी होती है। यह एक अशांत क्षेत्र है जिसमें अधिकांश धूल, जलवाष्प

और बादल होते हैं। सभी मौसम संबंधी घटनाएँ जैसे बादलों का बनना, हवाओं का चलना, बादलों का गरजना, बिजली चमकना, वर्षण और वर्षा क्षोभमण्डल तक ही सीमित हैं।

(ii) समतापमण्डल—क्षोभमण्डल के ऊपर लगभग 50 किमी की ऊँचाई तक समतापमण्डल स्थित है। इस परत में, ऊँचाई के साथ तापमान का गिरना अचानक रुक जाता है। इस परत में तेज वेग वाली हवाएँ लगातार पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं; जिन्हें जेट स्ट्रीम कहते हैं। यहाँ पर बहुत कम जलवाष्प और धूल होती है। यह शांत तथा स्वच्छ परत जेट विमानों को उड़ाने के लिए बहुत उपयोगी है। इसमें ओजोन गैस भी होती है जो सौर पराबैंगनी किरणों का अवशोषण करती है तथा सौर ऊर्जा के तीव्र रूप से पृथ्वी पर जीवन की रक्षा करती है।

(iii) मध्यमण्डल—मध्यमण्डल समतापमण्डल तथा तापमण्डल के बीच स्थित है। इसकी निचली सीमा समताप सीमा तथा ऊपरी सीमा मध्य सीमा द्वारा निर्धारित होती है। यह परत पृथ्वी की सतह से 50 से 80 किमी ऊपर स्थित है। मध्यमण्डल में ऊँचाई के साथ तापमान गिरता है।

(iv) तापमण्डल—तापमण्डल पृथ्वी की सतह से 80 किमी ऊपर होता है। इस परत में ऊँचाई के साथ तापमान बढ़ता है। पृथ्वी की सतह से 100 से 300 किमी ऊपर आयनमण्डल स्थित है, जहाँ इलेक्ट्रॉन का घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है। यह परत (आयनमण्डल) रेडियो-संचार और दूरसंचार के लिए बहुत उपयोगी है। तापमण्डल से परे, वातावरण बहुत महीन हो जाता है और धीरे-धीरे सौर वातावरण में विलीन हो जाता है।

2. पृथ्वी के लिए वायुमण्डल का महत्त्व निम्नलिखित हैं—
   (i) वायुमण्डल की निचली परत में जीवनदायिनी ऑक्सीजन होती है जो साँस के लिए आवश्यक है।
   (ii) पौधों को अपनी वृद्धि के लिए कार्बन-डाइ-ऑक्साइड व नाइट्रोजन की आवश्यकता होती है।
   (iii) यह सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों को पृथ्वी की सतह पर पहुँचने से रोकता है।
   (iv) यह एक ग्रीन हाउस की तरह कार्य करता है तथा दिन और रात के तापमान की तीव्रता को नियंत्रित करता है।
   (v) यह दिन के समय सूर्य की चमक को नर्म करता है।
   (vi) जलवायु व ऋतु परिवर्तन वायुमण्डल के कारण ही होते हैं।
   (vii) जलवाष्प की उपस्थिति संघनन और वर्षा का कारण बनती है।
   (viii) ध्वनि तरंगें वायु में गति करती हैं।
   (ix) यह उल्काओं से हमारी रक्षा करता है।
3. वे पवनें, जो पृथ्वी पर स्थायी रूप से एक ही दिशा, उच्च दाब से निम्न दाब की ओर चलती हैं, ग्रहीय पवनें कहलाती हैं।

ग्रहीय पवनें तीन प्रकार की होती हैं—(1) व्यापारिक पवनें, (2) पछुआ पवनें, (3) ध्रुवीय पवनें।

(i) व्यापारिक पवनें—ये पवनें उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तर-पूर्व से तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण-पूर्व से चलती हैं।

(ii) पछुआ पवनें—पछुआ पवनें दोनों गोलार्द्धों में शीतोष्ण कटिबन्ध में पश्चिम की ओर से चलती हैं। इन्हें 'विपरीत-व्यापारिक पवनें' भी कहते हैं, क्योंकि इनकी दिशा व्यापारिक पवनों से विपरीत होती है।

(iii) ध्रुवीय पवनें—ध्रुवीय पवनें शीत कटिबन्ध में चलती हैं। इन्हें ध्रुवीय 'पुरवा' भी कहा जाता है, क्योंकि ये पूर्व की ओर से चलती हैं। ये पवनें अत्यधिक ठण्डी तथा शुष्क होती हैं।

4. वाष्पीकरण, संघनन और वर्षण की प्रक्रिया निम्नलिखित हैं—

वाष्पीकरण—जल (तरल) के जलवाष्प (गैस) में बदलने की प्रक्रिया को वाष्पीकरण कहते हैं। वाष्पीकरण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

संघनन—जब संतृप्त हवा का तापमान ओसांक से नीचे चला जाता है तब हवा अपने भीतर नमी को बरकरार नहीं रख पाती है। अतिरिक्त जलवाष्प सूक्ष्म जल-बिन्दुओं में बदल जाती है। इस प्रक्रिया को संघनन कहते हैं। जलवाष्प के संघनन से बादल, कोहरा, ओस, पाला आदि बनते हैं।

वर्षण—जब बादलों में उपस्थित छोटी-छोटी पानी की बूँदें या बर्फ के क्रिस्टल आपस में जुड़कर बड़ी-बड़ी बूँदें बनाते हैं, जो तैरने के लिए बहुत भारी होती हैं, तब वे पृथ्वी की सतह पर गिरने लगती हैं। इस प्रक्रिया को वर्षण कहते हैं। वर्षण जल, हिम, ओला या हिमवर्षा के रूप में हो सकता है।

5. वर्षा के तीन प्रमुख प्रकार होते हैं—

(i) संवाहनिक वर्षा—इस प्रकार की वर्षा विषुवत रेखीय प्रदेशों में वर्ष भर होती है। दिन के समय भूमि गर्म हो जाती है, तब वायुराशि गर्म होकर ऊपर उठ जाती है तथा ऊपर की ठण्डी वायु भारी होने के कारण नीचे बैठने लगती हैं। इससे वायु में संवाहनिक धाराएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यह वर्षा दोपहर या शाम को होती है। इसके साथ बादलों का गर्जन, बिजली चमकना आदि भी होते हैं।

(ii) पर्वतीय वर्षा—पर्वतीय वर्षा तब होती है जब आर्द्र पवनों के सामने कोई पर्वतीय बाधा आ जाती है तब ये गर्म व नम पवनें पर्वत की ढलान के साथ ऊपर उठ जाती हैं, जो वर्षा के रूप में पर्वतों के सम्मुख ढाल पर पड़ती है, किन्तु विमुख ढालों पर उतरते हुए पवनों का तापमान दबाव के कारण बढ़ जाता है, जिससे उनकी नमी कम हो जाती है इसलिए वे पवनें वर्षा नहीं करा पातीं या बहुत कम वर्षा होती है। ऐसे क्षेत्रों को वर्षा के छाया प्रदेश कहते हैं।

(iii) चक्रवातीय वर्षा—इसे वाताग्री वर्षा (ललाट वर्षा) भी कहते हैं। यह तापमान चक्रवातों में जुड़ा है, जो मध्य अक्षांशों में बहुत आम है।

6. 'मौसम' शब्द किसी विशिष्ट स्थान एवं समय की वायुमण्डलीय स्थिति को दर्शाता है। इसमें तापमान, वायुदाब, आर्द्रता, अध:पतन (वर्षा या बर्फ) वायु तथा आकाश की स्थिति सम्मिलित हैं। किसी स्थान की जलवायु में मौसम के सभी तल आते हैं, किन्तु लम्बे समय के लिए। दूसरे शब्दों में, किसी स्थान की जलवायु वहाँ के मौसम की औसत परिस्थितियाँ होती हैं।
7. ग्लोबल वार्मिंग ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण होती है, जिनमें से 72% कार्बन-डाई-ऑक्साइड (CO_2), 18% मीथेन और 9% नाइट्रस ऑक्साइड (N_2O)। कार्बन डाइ ऑक्साइड उत्सर्जन है इसलिए यह ग्लोबल वार्मिंग का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है। कार्बन-डाई-ऑक्साइड अनिवार्य रूप से तेल, प्राकृतिक गैस, डीजल, जैविक डीजल, पेट्रोल, जैविक पेट्रोल, एथनॉल जैसे ईंधन को जलाने से बनती है। कार्बन-डाई-ऑक्साइड के उत्सर्जन में पिछले 50 वर्षों में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है और अभी भी हर साल लगभग 3% बढ़ रही है। कार्बनडाई-ऑक्साइड को वायुमण्डल में छोड़ा जाता है। जहाँ यह 100 से 200 वर्षों तक बनी रहती है। इससे हमारे वायुमण्डल में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की सांद्रता बढ़ती है जिसके कारण पृथ्वी पर औसत तापमान बढ़ जाता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें। (ज) स्वयं करें।

❑

13. जलमण्डल : जल का परिमण्डल

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) पूर्णिमा एवं अमावस्या को 2. (c) गुरुत्वाकर्षण
3. (a) कोहरा 4. (a) समृद्ध प्लैंक्टन की उत्पत्ति

(ख) 1. सुनामी 2. महासागर, वातावरण, भूमि 3. ठण्डी 4. वृहत्
5. 35

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (iv) 4. (iii)

(ङ) 1. वर्षा का जल धरातल के छिद्रों तथा दरारों में से रिसकर भूमि के नीचे स्थित शैलों (चट्टानों) में इकट्ठा हो जाता है, जिसे भूमिगत या भौम जल कहते हैं।
2. लहरें सागर और महासागरों के ऊपर बहने वाली हवाओं से बनती हैं।
3. सुनामी विशाल लहरें होती हैं, जो अध:सागरीय ज्वालामुखी उद्‌गारों, भूकम्पों, भूस्खलनों तथा अवपतन से उत्पन्न होती हैं।
4. जल महासागरों से वायुमण्डल में तथा वहाँ से भूमि पर एवं पुन: महासागरों में संचरण करता है। इसे ही जल चक्र या जलीय चक्र कहते हैं।
5. ज्वार चन्द्रमा और सूर्य के गुरुत्वाकर्षण बल के कारण उत्पन्न होते हैं।

(च) 1. भूमि पर होने वाली वर्षा में आसपास की हवा में कुछ घुली हुई कार्बन डाइ-ऑक्साइड होती है। जिससे कार्बोनिक एसिड के कारण वर्षा का जल थोड़ा अम्लीय हो जाता है। वर्षा प्राकृतिक रूप से चट्टान को नष्ट कर देती है और अम्ल रासायनिक रूप से चट्टानों को तोड़ देता है तथा खनिजों सोडियम क्लोराइड, मैग्नीशियम क्लोराइड और अन्य लवणीय पदार्थों को आयनों के रूप में घुलित अवस्था में ले जाता है। इन सामग्रियों को धाराओं, नदियों और महासागरों में ले जाया जाता है, जहाँ उन्हें लम्बे समय तक छोड़ दिया जाता है, जहाँ समय के साथ उनकी सांद्रता बढ़ती जाती है। समुद्री जल में लवणता की सांद्रता लगभग 35 प्रति हजार ग्राम है। इसका अर्थ यह है कि 1000 ग्राम जल में 35 ग्राम लवण घुले हुए हैं। लवणता की यह मात्रा स्थान-स्थान पर अलग होती है। लवणता की मात्रा वाष्पीकरण की दर, वर्षण की मात्रा, महासागरीय जल के संचरण तथा नदियों के स्वच्छ जल के मिश्रित होने से निर्धारित होती है।

2. जब सूर्य, चन्द्रमा तथा पृथ्वी तीनों एक सीधी रेखा पर होते हैं तो पूर्णिमा या अमावस्या के दिन सागरों में सामान्य रूप से अधिक ऊँचा ज्वार उठता है। इसी प्रकार निम्न ज्वार भी सामान्य से नीचा होता है। ऐसे ज्वार को वृहत् ज्वार कहा जाता है। वहीं दूसरी ओर, जब सूर्य, पृथ्वी तथा चन्द्रमा समकोणीय स्थिति में होते हैं, जैसे महीने के पहले और तीसरे चतुर्थांश में होता है, उच्च ज्वार सामान्य से कम ऊँचे होते हैं। ऐसा सूर्य तथा चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति के बँट जाने के कारण होता है ऐसे ज्वार लघु ज्वार कहलाते हैं।

3. ज्वार की उत्पत्ति का कारण पृथ्वी पर चन्द्रमा तथा सूर्य की आकर्षण शक्ति है। सूर्य की अपेक्षा चन्द्रमा की आकर्षण शक्ति अधिक होती है, क्योंकि यह पृथ्वी के अधिक निकट स्थित है।

   महासागरों की धाराएँ पवन तथा जल के घनत्व में तापमान, लवणता में भिन्नताएँ तथा भूकम्पों और तूफानों जैसी घटनाओं आदि से लाए गए अन्तर द्वारा उत्पन्न होती हैं।

4. सागरीय धाराएँ मछली पकड़ने, नौपरिवहन तथा व्यापार को प्रभावित करती हैं। ये धाराएँ मछली पकड़ने के क्षेत्रों की स्थिति को भी प्रभावित करती हैं क्योंकि वह स्थान जहाँ गर्म व ठण्डी धाराएँ मिलती हैं, प्लैंकटन में समृद्ध होते हैं। यह बहुत छोटे जीव होते हैं जो मछलियों के भोजन का स्रोत होते हैं। उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर स्थित न्यूफाउंडलैण्ड मछली पकड़ने का प्रसिद्ध स्थान है, जहाँ गल्फ स्ट्रीम धारा ठण्डी लैब्रेडोर धारा से मिलती है।

   महासागरीय धाराएँ नौ-संचालन को भी प्रभावित करती हैं, क्योंकि इनके द्वारा जलयान आसानी से चलते हैं, किन्तु कभी-कभी महासागरीय धाराएँ जलयानों के संचालन में समस्याएँ भी उत्पन्न करती हैं; उदाहरणार्थ—गर्म तथा ठण्डी धाराओं के मिलने से कोहरा उत्पन्न होता है, जिससे अन्तर्दृश्यता में कमी आ जाती है।

5. महासागरीय धाराएँ तटवर्ती क्षेत्रों की जलवायु को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। इन धाराओं के ऊपर बहने वाली पवनें धाराआं के प्रभाव को महाद्वीपों के आन्तरिक

भागों पर पहुँचाती हैं। ठण्डी धारा अपने तटवर्ती क्षेत्रों की जलवायु को ठण्डा बना देती हैं, जबकि गर्म धारा तटवर्ती क्षेत्रों को गर्म रखती है। इसलिए एक महाद्वीप के पूर्व और पश्चिम तट पर समान अक्षांशों पर स्थानों के तापमान में अंतर होता है। गर्म धारा के ऊपर बहने वाली पवन तटीय क्षेत्रों में वर्षा कराती है, जबकि ठण्डी धारा के ऊपर बहने वाली पवनें तटीय क्षेत्रों को ठण्डा तथा शुष्क बनाती हैं।

6. व्यापार और मछली पकड़ना ज्वार के उठने और गिरने से व्यापक रूप से प्रभावित होते हैं। उच्च ज्वार के दौरान मछलियाँ तटों के किनारे पर आ जाती हैं जिन्हें पकड़ना आसान हो जाता है। निम्न ज्वार मछुआरों को मछली पकड़ने और व्यापार के लिए खुले समुद्र में जाने में मदद करते हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

❑

14. भूमि तथा लोग

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (b) श्योक 2. (d) सहारा के कृषक 3. (a) मिसिसिपी
4. (b) अमेजन बेसिन के वर्षा वन 5. (d) गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा में

(ख) 1. ऑरेन्ज 2. मध्यम 3. सघन 4. डच 5. उत्तरी अमेरिका
6. स्वर्ण (सोना)

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. लद्दाख की जलवायु ठण्डी तथा शुष्क होती है, जबकि सहारा की जलवायु गर्म तथा शुष्क होती है।
2. जानवरों के प्रजनन और उनको पालने के लिए एक बड़ा फॉर्म रैंच कहलाता है।
3. विनीपेग को 'कैनेडियन प्रेयरी का प्रवेश-द्वार' कहा जाता है।
4. वेल्ड की प्रमुख खनिज संपदा सोना, हीरा, प्लैटिनम, यूरेनियम, क्रोमियम, लोहा तथा कोयला हैं।
5. सुन्दरी वृक्ष की बहुतायत के कारण गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा को 'सुन्दर वन' कहा जाता है।
6. लद्दाख में जॉस्कर तथा श्योक मुख्य नदियाँ बहती हैं।

(ङ) 1. यूरोपियनों के प्रेयरी में आने से पहले ये घास के मैदान अमेरिकन-इण्डियन का घर था, जिसे ब्लैकफुट नाम से जाना जाता था। वे आदिवासी थे, जो शिकार तथा भोजन-संग्रह द्वारा जीवन-यापन करते थे। यहाँ की स्थलाकृति पूर्वी कनाडा तथा ब्रिटिश द्वीप-समूहों से आकर बसने वाले लोगों के द्वारा परिवर्तित कर दी गई। उन्होंने घास प्रदेशों को साफ करके फॉर्म बनाए। 1885 ई० में कैनेडियन पैसिफिक रेलमार्ग की शुरुआत हुई, जिससे प्रेयरी के द्वार बस्तियों के लिए खुल

गए। लोगों ने रेलमार्ग के सहारे अपनी बस्तियाँ स्थापित कर लीं। आज भी अधिकांश बस्तियाँ रेलमार्ग के दोनों ओर 25 किलोमीटर के दायरे में हैं।

2. वेल्ड कृषि की दृष्टि से बहुत समृद्ध नहीं है लेकिन मक्का, गेहूँ, जौ, जई, आलू, तम्बाकू, कपास, गन्ना आदि उगाए जाते हैं। हालांकि वेल्ड जानवरों को पालने के लिए आदर्श है। पूर्वी आर्द्र भागों में पशु पाले जाते हैं, जबकि पश्चिमी शुष्क भागों में भेड़पालन होता है। भेड़ों को मुख्यत: ऊन के लिए पाला जाता है। उच्च वेल्ड सोना, हीरा, प्लेटिनम, यूरेनियम, क्रोमियम, कोयला और लौह अयस्क जैसे खनिजों से समृद्ध है। विटवाटर्सरैंड, जिसे रैंड भी कहते हैं, स्वर्ण-प्राप्ति (सोना) के लिए विख्यात है। वेल्ड क्षेत्र में खनन और विनिर्माणी उद्योग कृषि से भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। सोने की खोज से यहाँ लोहा, इस्पात, धात्विक पदार्थ, परिवहन उपकरण, रसायन आदि खनिज आधारित उद्योगों तथा वस्त्र, खाद्य प्रसंस्करण एवं डेयरी पदार्थों, जैसे—कृषि आधारित उद्योगों का विकास सम्भव हुआ।
3. सहारा मरुस्थल के लोग धूल भरी आँधी और गर्म हवाओं से बचाव के लिए भारी चोगे (वस्त्र) पहनते हैं। वे लम्बे ऊनी वस्त्र पहनते हैं जिससे उनका पूरा शरीर ढक जाता है। गर्म रेत से पैरों को बचाने के लिए वे भारी भरकम जूते भी पहनते हैं। तेज धूप से बचने के लिए वे सिर पर पगड़ी बाँधते हैं।
4. सन् 1492 ई० में कोलम्बस द्वारा नई दुनिया की खोज के बाद अमेजन बेसिन के जीवन में अत्यधिक परिवर्तन हुए हैं। अनेक यूरोपियन लोग दक्षिणी अमेरिका में आकर बस गए और उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों का निर्दयता से शोषण किया। यहाँ वनोद्योग भी प्रचलित रहा है। प्राकृतिक रबड़ अब आर्थिक रूप से अनुपयोगी हो गया है। बागानी खेती भी प्रारम्भ की गई। इन सब क्रियाकलापों का अमेजन बेसिन के पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
5. वेल्ड में केवल गर्मी के महीनों में वर्षा होती है, लेकिन वहाँ की भेड़ें साल भर ऊन देती हैं। इसलिए भेड़ पालन बहुत आम है। भेड़ पालन का महत्त्व अधिक होने के कारण वेल्ड में कृषि पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। इसलिए वेल्ड में कृषि महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि नहीं है।

कीजिए और सीखिए

(च) स्वयं करें।

(छ) स्वयं करें।

❑

15. लोकतन्त्र क्यों?

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) सीले ने 2. (a) लोकतंत्र 3. (b) संसदीय प्रणाली
4. (a) लिखित और कठोर 5. (a) समानता, सहभागिता एवं स्वतंत्रता

(ख) 1. राष्ट्रपति 2. अध्यक्षात्मक 3. फ्रांसीसी
4. संयुक्त राज्य अमेरिका 5. लुई सोलहवें

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (v) 3. (i) 4. (iv) 5. (ii)

(ङ) 1. लोकतन्त्र सरकार का वह रूप है जिसमें प्रशासन लोगों के हाथों द्वारा किया जाता है।

2. लोकतन्त्र में कानून सर्वोपरि होता है और सभी लोगों को कानून के अनुसार कार्य करना होता है। सभी कानून के अधीन हैं और समान कानून सभी पर समान रूप से लागू होते हैं। कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं होता। यदि कोई भी व्यक्ति कानून तोड़ता है, तो वह दण्डनीय है और यदि किसी ने कानून भंग नहीं किया है तो उसे दण्डित नहीं किया जा सकता।

3. तानाशाही लोकतन्त्र का विरोध करती है। तानाशाही में शासक अपनी मर्जी से शासन करता है। नागरिकों को सरकार के कामकाज में भाग लेने के लिए कोई अधिकार और स्वतन्त्रता नहीं दी जाती है।

4. लोकतान्त्रिक सरकार के विभिन्न रूप संसदीय सरकार तथा अध्यक्षात्मक सरकार हैं। एक लोकतान्त्रिक सरकार एकात्मक या संघात्मक भी हो सकती है।

5. सम्पूर्ण विश्व में निम्नलिखित तत्त्व लोकतन्त्र को लोकप्रिय बनाते हैं—
(i) औपचारिक समानता, (ii) स्वतन्त्रता, (iii) सार्वजनिक सहभागिता, (iv) निर्णय लेने की प्रक्रिया, (v) मतभेदों को दूर करना, (vi) मानवीय गौरव की वृद्धि।

(च) 1. लोकतन्त्र का उदय यूनानी नगर एथेन्स में लगभग 2,500 वर्ष पहले हुआ। एथेन्स के पुरुष नागरिक वर्ष में लगभग चालीस बार एक स्थान पर इकट्ठा होते थे। यह लोगों की सभा होती थी। यह प्रत्यक्ष लोकतन्त्र था, जिसमें महिलाओं, दासों तथा विदेशियों को छोड़कर, अन्य सभी नागरिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाया करते थे। यद्यपि प्रत्यक्ष लोकतन्त्र ही वास्तविक लोकतन्त्र है किन्तु वर्तमान समय में विशाल क्षेत्रों तथा जनसंख्या वाले बड़े देशों के लिए यह प्रणाली व्यावहारिक नहीं है। आजकल लगभग सभी देशों में अप्रत्यक्ष या परोक्ष लोकतन्त्र प्रचलित है जिसे प्रतिनिधि लोकतन्त्र भी कहा जाता है। इस प्रणाली में सभी नागरिक स्वयं प्रशासन में भाग नहीं लेते बल्कि उनके प्रतिनिधि प्रशासन में सहभागिता रखते हैं। लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं, जो लोगों की ओर से कानून बनाने तथा सरकार चलाने का कार्य करते हैं। आधुनिक लोकतन्त्र का आविर्भाव यूरोप में हुआ। सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रान्ति तथा अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसी क्रान्ति ने लोकतन्त्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। गौरवपूर्ण क्रान्ति ने लोकतन्त्र के पहले सिद्धान्त अर्थात् 'कानून का शासन' की नींव रखी।

2. लोकतान्त्रिक सरकार के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं—

(i) संसदीय सरकार—संसदीय सरकार में कार्यपालिका अपने कार्यों, सत्ता के प्रयोग तथा मन्त्रियों के लिए संसद के प्रति उत्तरदायी या जवाबदेह होती

है। इस प्रणाली की उत्पत्ति तथा विकास इंग्लैण्ड में हुआ था। यह प्रणाली भारत सहित विश्व के अधिकांश देशों में प्रचलित है।

(ii) अध्यक्षात्मक सरकार—अध्यक्षात्मक सरकार वह सरकार है, जिसमें कार्यपालिका की नियुक्ति विधायिका के सदस्यों में से नहीं होती तथा वह विधायिका के प्रति उत्तरदायी भी नहीं होता। इस प्रणाली में राज्य (देश) का अध्यक्ष सर्वोच्च शक्तिशाली होता है तथा उसके मन्त्री उसके सलाहकार होते हैं। इस प्रणाली में राज्य (देश) का अध्यक्ष वास्तविक प्रमुख होता है, जो संविधान तथा कानून द्वारा प्रदत्त अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग करता है। अध्यक्षात्मक प्रणाली की उत्पत्ति तथा विकास अमेरिका में हुआ।

एक लोकतान्त्रिक सरकार एकात्मक या संघात्मक भी हो सकती है। अठारहवीं शताब्दी तक सभी सरकारें एकात्मक होती थीं। विश्व की पहली संघात्मक सरकार की स्थापना संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई थी, जब इसके तेरह स्वतन्त्र राज्यों ने एक संघ बनाकर एक नए राज्य (देश) को जन्म दिया। जब सभी शक्तियाँ कानूनी रूप से केन्द्र सरकार में निहित होती हैं तथा प्रान्तीय सरकारें पूर्णत: केन्द्र सरकार के अधीन होती हैं तो इस प्रणाली को एकात्मक सरकार कहते हैं। जब केन्द्र तथा राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन किया जाता है तथा दोनों स्वतन्त्र रूप से कार्य करते हैं अर्थात् एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं। ऐसी सरकार को संघात्मक सरकार कहते हैं। भारत ने संघीय प्रणाली को अपनाने के साथ-साथ आपातकाल का सामना करने के लिए एकात्मक प्रणाली के कुछ तत्त्वों को भी अपनाया है।

3. लोकतन्त्र के महत्त्वपूर्ण तत्त्व निम्नलिखित हैं—

(i) औपचारिक समानता—समानता लोकतन्त्र का प्रमुख आधार-स्तम्भ है। प्रकृति ने सभी व्यक्तियों को समान बनाया है और यही समानता लोकतन्त्र का आधार है। लोकतन्त्र में जाति, रंग, धर्म या जन्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता, केवल योग्यता को ही महत्त्व दिया जाता है। कानून की दृष्टि में सभी समान हैं। सभी व्यक्तियों पर एक समान कानून लागू होते हैं।

(ii) स्वतन्त्रता—व्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र का अन्य प्रमुख आधार स्तम्भ है। स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य अपना सम्पूर्ण विकास नहीं कर सकता। विचार तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, संगठन स्थापित करने तथा सरकार की आलोचना करने की स्वतन्त्रता तथा प्रेस की स्वतन्त्रता केवल लोकतन्त्र में ही प्राप्त होती है।

(iii) सार्वजनिक सहभागिता—सार्वजनिक सहभागिता लोकतान्त्रिक व्यवस्था का आधार है। इसके अभाव में लोकतन्त्र न तो वास्तविक हो सकता है और न ही उपयोगी। सार्वजनिक सहभागिता से अभिप्राय सरकार चलाने तथा

राज्य की गतिविधियों में लोगों की सहभागिता से है। वयस्क मताधिकार सार्वजनिक सहभागिता का सर्वाधिक लोकप्रिय स्वरूप है।

(iv) **निर्णय लेने की प्रक्रिया**—लोकतन्त्र में निर्णय लेने की एक निश्चित प्रणाली होती है, जो लोगों के हाथ में होती है। लोग अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं, जो विधायिका या संसद का निर्माण करते हैं, जो विभिन्न विधेयकों को पारित करते हैं तथा कानून बनाते हैं। इन कानूनों के अनुसार ही देश पर शासन किया जाता है। यदि कोई सरकार लोगों की इच्छाओं की पूर्ति नहीं करती है, तो अगले चुनावों में उसे बदला जा सकता है।

(v) **मतभेदों को दूर करना**—लोकतन्त्र में लोगों पर कुछ भी थोपा या लादा नहीं जा सकता। जनता और उसके चुने हुए प्रतिनिधि अपने मतभेदों को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार, विचारों का आदान-प्रदान तथा विवादों का निर्णय लोकतन्त्र को विश्व में लोकप्रिय बनाते हैं। सत्ताधारी राजनीतिक दल तथा विपक्षी दलों के मतभेदों को परस्पर सौहार्द्र से सुलझाया जाता है।

(vi) **मानवीय गौरव की वृद्धि**—केवल लोकतन्त्र में ही मानव की स्वतन्त्रता, समानता तथा बन्धुत्व सुनिश्चित होते हैं। न केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता सुनिश्चित की जाती है बल्कि आर्थिक स्वतन्त्रता सुनिश्चित करने के लिए भी सभी उपाय किए जाते हैं। हमारे देश में सभी क्षेत्रों में, जैसे—नागरिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक आदि में सभी नागरिकों की समानता सुनिश्चित की गई है। अस्पृश्यता पर रोक लगाकर सामाजिक समानता की स्थापना की गई है। समाज के कमजोर वर्गों के सभी प्रकार के शोषण पर रोक लगाकर लोगों को आर्थिक समानता सुनिश्चित की जाती हैं। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़ी जातियों के कल्याण के लिए भारत सरकार द्वारा कदम उठाए गए हैं।

4. 'कानून के सामने सब बराबर हैं' का अर्थ है कि प्रत्येक नागरिक बिना किसी भेदभाव के सभी संवैधानिक अधिकारों और स्वतन्त्रताओं का हकदार है, जैसे—लिंग, स्थिति, जाति, धर्म या जन्म स्थान। यह लोकतन्त्र का एक संस्थापक पहलू है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकार सभी नागरिकों की जरूरतों का ध्यान रखेगी और उन्हें पूरा करेगी। यह लोगों के हितों की रक्षा करता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

(झ) स्वयं करें।

(ञ) स्वयं करें।

❑

16. लोकतन्त्र का संस्थागत प्रतिनिधित्व

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) वयस्क नागरिकों को 2. (b) चुनाव 3. (a) लोकतांत्रिक
4. (c) हाथ का पंजा 5. (b) तेलुगुदेशम पार्टी

(ख) 1. आकांक्षाओं 2. चुनाव 3. सन् 1925 4. घोषणा
5. कमल

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (i) 3. (v) 4. (iii) 5. (iv)

(ङ) 1. सार्वभौम व्यस्क मताधिकार से तात्पर्य यह है कि सभी व्यस्क नागरिकों को जाति, धर्म, वर्ग या लिंग भेद के बिना मत देने का अधिकार प्रदान किया जाना चाहिए।

2. लोकतन्त्र में चुनाव का बहुत महत्त्व है। सरकार चलाने के लिए जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। चुनाव प्रशासन के प्रति जनता में रुचि जाग्रत करते हैं। चुने गए प्रतिनिधियों से लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने की उम्मीद की जाती है, अन्यथा लोगों का सरकार पर से विश्वास उठ जाएगा और वे अन्य प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे। चुनाव शान्तिपूर्वक सरकार बदलने का माध्यम है।

3. राजनीतिक दल प्रतिनिधि लोकतंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आमतौर पर चुनाव एक सरकारी दल बनाने के लिए या एक राजनीतिक दल बनाने के लिए होते हैं। सभी दल अपना चुनावी घोषणा पत्र जारी करते हैं, जिसमें वे अपनी नीतियों का प्रचार करते हैं। वे अपने पक्ष में जनमत बनाने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करते हैं। वे विभिन्न महत्त्वपूर्ण मुद्दों के बारे में लोगों को शिक्षित करके लोकतंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सत्तारूढ़ दल अपनी उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है, जबकि विपक्षी दल सरकार की नीतियों और कुशासन की आलोचना करते हैं। वे जनता की शिकायतों, कष्टों तथा आकांक्षाओं को सरकार तक पहुँचाते हैं।

4. मतदान में गुप्त मतदान प्रणाली अपनाई जाती है क्योंकि मतदाता बिना किसी भय के स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी पसन्द से मतदान कर सकते हैं।

5. भारत के प्रत्येक राज्य में एक या अधिक प्रादेशिक दल विद्यमान हैं। प्रादेशिक दल स्थानीय समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं और उनका समाधान कर सकते हैं। राष्ट्रीय दल क्षेत्रीय (स्थानीय) मुद्दों को ज्यादा महत्त्व नहीं देते हैं। क्षेत्रीय दलों का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि कई भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा जातीय विविधताओं के कारण एक प्रदेश के लोगों की आवश्यकताएँ-आकांक्षाएँ दूसरे प्रदेश के लोगों से अलग होती हैं।

(च) 1. लोकतन्त्र में सत्ताधारी दल या गठबन्धन के संसद सदस्यों को छोड़कर अन्य दलों के सदस्य अधिकारिक तौर पर विपक्ष का गठन करते हैं। यह लोकतन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सरकार की जन-विरोधी नीतियों का विरोध

करता है। यह मन्त्रीपरिषद् की तानाशाही की जाँच करता है और राजनीतिक विकल्प प्रदान करता है। यह जनमत तैयार करता है और राजनीतिक चेतना जाग्रत करता है। वास्तव में एक लोकतंत्र की कार्यप्रणाली को सफल होने के लिए संगठित विपक्ष का होना आवश्यक है।

2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस भारत की सबसे पुरानी राजनीतिक पार्टी है। यह भारत की एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय पार्टी है। 2004 के आम चुनाव में जारी घोषणा-पत्र के अनुसार इसकी नीतियाँ और कार्यक्रम इस प्रकार हैं—
   (i) लोकतान्त्रिक समाजवाद—लोकतान्त्रिक समाजवाद की स्थापना के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा। अमीर और गरीब के बीच की खाई को कम करने के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा।
   (ii) धर्मनिरपेक्षता—धर्म के आधार पर नागरिकों के बीच कोई भेदभाव नहीं होगा। सभी धर्मों का समान रूप से सम्मान किया जाएगा।
   (iii) कृषि और औद्योगिक विकास—कृषि विकास को बढ़ाने के लिए सिंचाई क्षमता के विस्तार पर जोर दिया जाएगा। औद्योगिक विकास के लिए ऊर्जा के नए स्रोतों का दोहन किया जाएगा। इसका उद्देश्य कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना है।
   (iv) गरीबी समाप्त करना—गरीबी उन्मूलन के लिए सभी संभव प्रयास किए जाएँगे। ग्रामीण रोजगार के विस्तार पर जोर दिया जाएगा।
   (v) विदेशों से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध—कांग्रेस सभी देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना चाहती है। मतभेदों को शांतिपूर्ण तरीकों से सुलझाया जाएगा।
   (vi) विदेशी निवेश को प्रोत्साहन—देश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए कांग्रेस विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करती है।

3. भारत में दलीय प्रणाली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—
   (i) भारत में राजनीतिक दलों की संख्या बहुत अधिक है। अनेक पार्टियाँ क्षेत्रीय और सांप्रदायिक आधार पर बनाई जाती हैं।
   (ii) राष्ट्रीय दलों के अतिरिक्त अनेक क्षेत्रीय दल हैं।
   (iii) केन्द्र में एक ही राजनीतिक दल का बोलबाला रहा है, लेकिन अतीत में हुए कई चुनावों में एक भी राजनीतिक दल को केन्द्र में पूर्ण बहुमत नहीं मिल सका, इसलिए उसे सरकार बनाने के लिए दूसरे राजनीतिक दल का समर्थन लेना पड़ा। अतीत की यूपीए सरकार भी कई दलों द्वारा गठित गठबंधन की सरकार थी।
   (iv) दल-बदल एक सामान्य प्रथा है, हालांकि सन् 1985 के दल-बदल निषेध कानून के लागू होने के बावजूद कुछ कमियाँ रह जाने के कारण दल-बदल जारी है, जिसके द्वारा चुनी हुई लोकप्रिय सरकार को गिरा दिया जाता है।

4. जब कोई भी एक राजनीतिक दल अपर्याप्त संख्या के कारण अपनी सरकार बनाने में असफल रहता है। तो उसे सरकार बनाने के लिए अन्य राजनीतिक दलों के सहयोग तथा सहायता की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार की मिली-जुली सरकार को गठबन्धन सरकार कहते हैं। केन्द्र में पहला गठबन्धन 1977 ई० में हुए छठे आम चुनाव में बना था। वर्ष 1999-2004 की एनडीए सरकार में 24 दल थे। 2004 एवं 2009 की यूपीए सरकार भी गठबन्धन सरकार थी, जिसका गठन 10 से अधिक पार्टियों ने किया था। गठबन्धन सरकारों में विभिन्न प्रादेशिक दलों का प्रतिनिधित्व होता है। हालांकि पार्टी के अलग-अलग सदस्यों के अलग-अलग विचारों के कारण कुछ मुद्दों पर निर्णय लेने में अधिक समय लगता है। राज्य स्तर पर गठबन्धन सरकारें चौथे आम चुनावों के बाद बनी थी। ऐसी कई सरकारें, जैसे—उत्तर प्रदेश, हरियाणा, बिहार, बंगाल आदि में अस्थिर सरकारें थीं।
5. गठबन्धन सरकार संसदीय सरकार की कैबिनेट होती है, जिसमें कई राजनीतिक दल सहयोग करते हैं, जिससे कि उस गठबन्धन के भीतर किसी एक दल के प्रभुत्व को कम किया जा सके। इस व्यवस्था के लिए दिया जाने वाला सामान्य कारण यह है कि कोई भी दल अपने दम पर संसद में बहुमत हासिल नहीं कर सकता है। एक गठबन्धन सरकार राष्ट्रीय आपदा या संकट के समय में भी बनाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, युद्ध या आर्थिक संकट के समय सरकार को कथित उच्च राजनीतिक वैधता या सामूहिक पहचान जो वह चाहती है, उच्च जोकि आंतरिक राजनीतिक संघर्ष को कम करने में भी भूमिका निभाती है ऐसे समय में पार्टियाँ सर्वदलीय-गठबन्धन बना लेती हैं। यदि कोई गठबन्धन टूटता है तो विश्वास मत या अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है।

कीजिए और सीखिए

(छ) 1. समान (EQUAL) 2. अधिकार (RIGHT)
3. आम (GENERAL) 4. शिक्षा (EDUCATION)
5. जागरुक (ENLIGHTEN)।

❑

17. राज्य सरकार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (d) विधान परिषद् 2. (b) स्पीकर 3. (d) छह वर्ष का
4. (b) सबसे बड़े दल के नेता को 5. (c) मुख्यमन्त्री

(ख) 1. संरचना 2. हटा 3. सदन 4. राज्यपाल 5. मुखिया

(ग) 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (v) 4. (vi) 5. (i)
6. (i)

(ड) 1. द्वि-सदनीय विधानमण्डल में निचला सदन तथा ऊपरी सदन होते हैं। ऊपरी सदन को विधान परिषद् कहते हैं जबकि निचले सदन को विधान सभा कहते हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, जम्मू और कश्मीर और आन्ध्र प्रदेश राज्यों में द्वि-सदनीय विधानमण्डल हैं।

2. यदि मन्त्रिपरिषद् विधानसभा का विश्वास खो देती है तथा अन्य कोई दल मन्त्रिमण्डल बनाने में असमर्थ होता है या राज्य में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाती है, तब राज्यपाल राज्य में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है। राष्ट्रपति शासन के दौरान राज्य का शासन राज्यपाल द्वारा चलाया जाता है।

3. मुख्यमन्त्री के दो कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) वह अपने उन साथियों की एक सूची तैयार करता है, जिन्हें वह मन्त्रिमण्डल में शामिल करना चाहता है और नियुक्ति के लिए उस सूची को राज्यपाल को सौंप देता है।

(ii) वह मन्त्रियों के विभागों का निर्णय करता है। राज्यपाल मुख्यमन्त्री की सलाह पर मन्त्रियों के विभागों का बँटवारा करता है।

4. किसी राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।

5. एक राज्य का दिन-प्रतिदिन का प्रशासन कार्य नौकरशाहों या सिविल सेवा अधिकारियों द्वारा किया जाता है। वे राजनीतिक कार्यपालिका द्वारा लिए गए नीतिगत निर्णयों के अनुसार कार्य करते हैं।

(च) 1. विधान सभा के विपरीत, विधान परिषद् प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित निकाय नहीं है। इसकी संरचना निम्नलिखित है—

(i) इसके 1/3 सदस्य राज्य की विधान सभा के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं।

(ii) इसके 1/3 सदस्य स्थानीय सरकारी निकायों, जैसे—नगरपालिका, जिला बोर्ड आदि द्वारा चुने जाते हैं।

(iii) इसके 1/12 सदस्य राज्य के विश्वविद्यालय-स्नातकों द्वारा चुने जाते हैं।

(iv) इसके 1/12 सदस्य माध्यमिक स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा चुने जाते हैं।

(v) इसके 1/6 सदस्य राज्य के राज्यपाल द्वारा नामांकित किए जाते हैं। ये सदस्य कला, साहित्य, समाज सेवा आदि क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्ति होते हैं।

2. चुनावों के बाद, राज्यपाल विधानसभा में सबसे बड़े दल के नेता को सरकार बनाने का निमन्त्रण देता है। यदि किसी दल के पास बहुमत नहीं है, तब एक गठबन्धन की सरकार बनाई जा सकती है। मुख्यमन्त्री एक परिषद् का निर्माण करता है, जिसमें राज्यपाल की कोई स्वेच्छा नहीं होती, किन्तु उसकी नियुक्ति राज्यपाल करता है। वह उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाता है।

3. राज्यपाल कार्यपालक, विधायी, न्यायिक तथा विवेकाधीन शक्तियों का प्रयोग करता है। राज्यपाल की शक्तियाँ तथा कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) कार्यकारी शक्तियाँ—राज्यपाल राज्य का संवैधानिक प्रधान होता है। वह मुख्यमन्त्री और उसकी सिफारिश पर मन्त्रिपरिषद् की नियुक्ति करता है।

वह एटॉर्नी जनरल, एडवोकेट जनरल, चेयरमैन और राज्य सिविल सेवा के सदस्यों एवं अन्य अधिकारियों की नियुक्ति करता है।

(ii) विधायी शक्तियाँ—राज्यपाल राज्य विधानमण्डल के सत्र को बुलाता है तथा समापन करता है। कोई भी विधेयक तब तक कानून नहीं बन सकता जब तक कि वह इसे मंजूरी नहीं देता। जब विधानसभा सत्र नहीं चल रहा हो तब वह अध्यादेश जारी कर सकता है।

(iii) न्यायिक शक्तियाँ—राज्यपाल अपराधियों की दया की अपील पर माफी दे सकता है या उनकी सजा को निलम्बित या परिवर्तित कर सकता है।

(iv) विवेकाधीन शक्तियाँ—जब मन्त्रिपरिषद् विधान सभा का विश्वास खो देती है और अन्य कोई दल मन्त्रिमण्डल बनाने में असमर्थ होता है या राज्य में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा जाती है, तब राज्यपाल राज्य में राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है। यदि राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया जाता है तो मन्त्रिपरिषद् को बर्खास्त कर दिया जाता है और राज्य का शासन राज्यपाल द्वारा चलाया जाता है।

4. विधानसभा का सत्र न होने पर भी राज्यपाल अध्यादेश जारी कर सकता है। ऐसे अध्यादेश को नए सत्र के आरंभ होने के छः सप्ताह के अन्दर ही विधानमण्डल द्वारा अनुमोदित करना चाहिए।
5. लोकतन्त्र में लोगों की शक्ति ज्यादा महत्त्व रखती है इसलिए एक नामित उम्मीदवार की तुलना में एक निर्वाचित उम्मीदवार की शक्ति अधिक होगी।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

18. मीडिया की समझ

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) प्रिण्ट मीडिया 2. (a) जनमत तैयार करती है
3. (a) प्रिण्ट मीडिया पर

(ख) 1. लोकप्रियता 2. जनमत 3. कार्य 4. आधार

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. (iii) 2. (iv) 3. (i) 4. (v) 5. (ii)

(ड) 1. विज्ञापन में उन तकनीकों एवं तरीकों का उपयोग होता है जिससे उत्पादों, सेवाओं, विचारों और कारणों को आमजन के सामने लाया जाता है जिससे कि लोग विज्ञापन में दी गई वस्तु के बारे में प्रतिक्रिया कर सकें।

2. विज्ञापन के दो प्रकार निम्नलिखित हैं—
   (i) व्यावसायिक विज्ञापन (ii) सामाजिक विज्ञापन
3. सूचना के अधिकार से तात्पर्य यह है कि लोगों को वह सब कुछ जानने का अधिकार है, जो उनके जीवन को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करता है।

(च) 1. मीडिया आधुनिक लोकतन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोकतन्त्र में सभी वयस्क नागरिकों को मतदान करने और अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार दिया जाता है। इसलिए सत्तारूढ़ और विपक्षी दल जनता के संपर्क में रहने और अपने पक्ष में जनमत बनाने की कोशिश करते हैं। इसलिए प्रत्येक लोकतान्त्रिक देश जनता को जनमत बनाने तथा अपने विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता के अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार जनसम्पर्क तथा जनसंचार के विभिन्न साधन जनमत तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ जनमत विकसित करने में भी मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

2. रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा आदि जनसंचार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यम हैं। रेडियो तथा दूरदर्शन समाचार-पत्रों पर भारी पड़ते हैं क्योंकि इनकी पहुँच अनपढ़ लोगों तक है, जिसके माध्यम से ऐसे लोग भी अपना मत बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, रेडियो तथा दूरदर्शन देश के दूर-दराज स्थानों तथा गाँवों में भी पहुँच रखते हैं। देश के प्रत्येक कोने-कोने में लोग समाचार, नेताओं के भाषण तथा राजनीतिक वार्ताएँ सुन सकते हैं। सिनेमा मनोरंजन का बहुत महत्त्वपूर्ण साधन है। यह अनेक सामाजिक समस्याओं तथा उनके समाधान को प्रकाश में लाता है। प्रत्येक फिल्म एक सन्देश देती है।

3. सूचना के अधिकार को प्राप्त करने के लिए लोगों को लम्बे समय तक कठिन संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने धरना दिया, प्रदर्शन किया और कुछ अधिकारियों का घेराव भी किया। अंतत: वे अपने प्रयास में सफल हुए और कई राज्य सरकारों को 'सूचना का अधिकार अधिनियम' पारित करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस कानून से लोगों को प्रशासन के सभी क्षेत्रों में सूचना का अधिकार प्राप्त हुआ। उन्हें व्यय बिल, वाउचर, मस्टर रोल आदि के रिकॉर्ड से सम्बन्धित दस्तावेजों की प्रतियाँ प्राप्त करने की अनुमति दी गई थी। महाराष्ट्र, कर्नाटक, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, गोवा आदि राज्यों की सरकारों ने भी ऐसे कानून बनाए हैं।

4. सामाजिक विज्ञापन महत्त्वपूर्ण सामाजिक विषयों जैसे—परिवार नियोजन, कैन्सर के प्रति जागरूकता, कन्या शिशु के प्रति आदर, साम्प्रदायिक एकता, प्राकृतिक आपदा पीड़ितों के लिए सहायता, राष्ट्रीय एकता आदि को प्रोत्साहित करते हैं। सामाजिक विज्ञापन सन् 1970 में प्रारम्भ हुए, किन्तु सार्वजनिक क्षेत्र में विज्ञापन तथा जन-चेतना के अभियान सन् 1980 में प्रारम्भ हुए। इनके अन्तर्गत परिवार नियोजन, सशस्त्र सेना में भर्ती, राष्ट्रीय एकता, नशा-विरोधी अभियान आदि शामिल थे।

5. राष्ट्रीय स्वास्थ्य के हित में, स्वास्थ्य मंत्रालय शहरों या देश में रेडियो, टी०वी०, समाचार-पत्र और होर्डिंग पर विज्ञापन देता है। यह नागरिकों को बच्चों के टीकाकरण, सर्दी, पीत ज्वर, डेंगू बुखार और चिकनगुनिया से बचने के लिए और सावधानी बरतने के लिए ज्ञान और सूचना का प्रसार करता है। यह जानकारी सामाजिक समारोह के दौरान प्रसारित की जाती है, जिसमें बीमारी को कम करना और स्वच्छता के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करना बताया जाता है। सामाजिक विज्ञापन शहर में सामाजिक आयोजनों जैसे कि स्वतन्त्रता दिवस समारोह, गणतन्त्र दिवस और त्योहारों जैसे—होली, दिवाली के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी भी देते हैं। लोग कार्यक्रम स्थल पर होना सुनिश्चित करते हैं और बातचीत करते हैं और अपनी खबरें, उपहार और अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

कीजिए और सीखिए

(छ) स्वयं करें।

(ज) स्वयं करें।

❑

19. हमारे बाजार

पढ़ें और उत्तर दें

(क) 1. (a) थोक में समान रखने वाला 2. (b) मध्यस्थ

(ख) 1. आवश्यकता 2. बिचौलिया 3. कम मात्रा 4. नहीं

(ग) 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) 1. (ii) 2. (iii) 3. (iv) 4. (i)

(ङ) 1. बाजार को एक ऐसे स्थान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जहाँ क्रेता (खरीददार) और विक्रेता (बेचने वाले) दोनों मिलते हैं और क्रय-विक्रय गतिविधियों का संचालन करते हैं।

2. बाजार दो प्रकार के होते हैं—थोक और खुदरा बाजार। थोक बाजार में वस्तुओं का ज्यादा मात्रा में व्यापार होता है, जबकि खुदरा बाजार में वस्तुओं का कम मात्रा में व्यापार होता है।

3. हमें अपने दैनिक जीवन में अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जैसे—विभिन्न खाद्य पदार्थ, कपड़े, टूथपेस्ट, टूथब्रश, साबुन, तेल, कंघी आदि। बच्चों को किताबें, कॉपी और विभिन्न स्टेशनरी सामान आदि की आवश्यकता होती है। ये सभी वस्तुएँ हमें खुदरा बाजार से प्राप्त होती है। जो प्राय: हमारे आसपास ही स्थित होते हैं। एक खुदरा बाजार में अनेक दुकानें होती हैं, जो हमारी विविध आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। यहाँ हम वस्तुओं की विशेषज्ञता पाते हैं। सब्जी की दुकानें, फलों की दुकानें, कन्फेक्शनरी, शीतल पेय, मिठाई, ग्रोसरी, स्टेशनरी आदि की दुकानें होती हैं। कुछ खुदरा बाजार में सेवाओं से संबंधित दुकानें

जैसे—नाई, दर्जी, ड्राईक्लीनर, ऑटो-रिपेयरिंग, केमिस्ट की दुकान, डॉक्टर का क्लीनिक आदि भी होते हैं। ये सभी दुकानें हमारी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं।

4. निम्नलिखित कारक लोगों की बाजार तक पहुँच को प्रभावित करते हैं—
   - **(i) वस्तुओं की उपलब्धता**—एक ही बाजार में विभिन्न वस्तुओं की उपलब्धता लोगों की बाजार तक पहुँच को प्रभावित करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण कारक है।
   - **(ii) सुविधा**—रिहायशी कालोनियों के निकट स्थित बाजार दूर स्थित बाजारों की अपेक्षा बड़ी संख्या में ग्राहकों को आकर्षित करते हैं।
   - **(iii) उधार**—कुछ लोग उधार सुविधा पर वस्तुएँ खरीदना पसंद करते हैं और यह ग्राहकों को अधिक आकर्षित करता है।
   - **(iv) गुणवत्ता**—वह बाजार जो अपनी गुणवत्ता के स्तर को बनाए रखता है, अधिक ग्राहकों को आकर्षित करता है।
   - **(v) मूल्य**—अधिक ग्राहक उस बाजार की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं, जहाँ वस्तुएँ उचित मूल्य पर बेची जाती हैं।
   - **(vi) आय-चक्र**—सर्वोत्तम खुदरा दुकानदार वही है, जो निम्न आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग और उच्च आय वर्ग के ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करता है।
5. थोक बाजार वह है जहाँ वस्तुओं का थोक में व्यापार होता है। फुटकर विक्रेता बड़ी संख्या या मात्रा में थोक विक्रेताओं से वस्तुएँ खरीदते हैं। थोक व्यापारी उत्पादकों या निर्माताओं से थोक में वस्तुएँ खरीदते हैं और उन्हें खुदरा विक्रेताओं को बेचते हैं।
6. थोक बाजार में बिचौलियों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। खेतों या बागों से उपज और ग्राहकों के बीच अनेक बिचौलिए या एजेंट प्रमुख भूमिका निभाते हैं। किसान के लिए अपनी उपज को स्वयं बाजार में जाकर और सीधे ग्राहकों को बेचना संभव नहीं है। यदि उत्पादक बाजार से दूर किसी दूसरे शहर या राज्य में रहता है तो उसे एक एजेंट की आवश्यकता होती है जो उसकी उपज को ज्यादा मात्रा में खरीदकर उसके परिवहन की व्यवस्था करके, माल को दूर स्थित थोक बाजारों में पहुँचाता है। इस प्रकार बिचौलिए थोक बाजारों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कीजिए और सीखिए

(च) स्वयं करें।

❑

अर्द्ध-वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (d) सप्त सैंधव 2. (c) श्रीरंगपट्टम 3. (c) मुसलमानों पर
4. (d) मेवाड़ के 5. (a) नादिर शाह

(ख) 1. इब्राहिम, बाबर 2. फरगाना 3. अहोम 4. निर्गुण
5. प्राचीन बंगाली।

(ग) 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✗)

(घ) 1. बुंदेलखण्ड 2. बंगाल 3. अवन्ति 4. गुजरात
5. अजमेर 6. दकन

(ङ) 1. गोंडवाना जिले कभी-कभी गोंडाराण्य भी कहा जाता है। मध्य भारत में एक ऐतिहासिक प्रदेश है जिसका विस्तार मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों तक है। यहाँ द्रविड वर्ग की गोंड जनजाति निवास करती है, जिसकी जनसंख्या 75 लाख से अधिक है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख चौदहवीं शताब्दी के मुस्लिम वृत्तान्तों में मिलता है। गोंड जनजाति राज्य-निर्माण का उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करती है। मानवशास्त्री इन्हें प्राक-द्रविड़ बताते हैं। इनकी त्वचा का रंग गहरा (श्याम वर्ण), चपटी नाक, मोटे होंठ, सीधे बाल तथा छोटा कद है। गोंडी तथा मात्री इनकी प्रमुख भाषा है, जो इण्डो-आर्य वर्ग से मिलती-जुलती है। ये लोग स्थानान्तरी कृषि करते हैं जिसे स्थानीय रूप से 'दिप्पा कृषि' कहा जाता है। यह असम की झूम कृषि जैसी है। ये लोग पहाड़ी ढालों पर सोपानी-खेत बनाकर भी कृषि करते हैं, जिसे पेंडा-कृषि कहा जाता है। वे खेतिहर मजदूर के रूप में भी काम करते हैं। उनके कुछ उप-समूह मछली पकड़ने में लगे हुए हैं। गाँवों की गतिविधियाँ भी उनकी अर्थव्यवस्था में योगदान करती हैं। वे वनोपज संग्रह भी करते हैं।

2. गुरु नानक के भजनों को गुरुमुखी में गुरु अंगद ने संकलित किया।

3. राजपूत चित्रकला की दो नई शैलियों के नाम निम्नलिखित हैं—
(i) राजस्थानी शैली, (ii) पहाड़ी (काँगड़ा) शैली।

4. हैदराबाद के स्वतन्त्र राज्य की स्थापना चिन किलिच खाँ, जो मुगल सम्राट मुहम्मद शाह का मन्त्री था, ने की थी।

5. मराठा बहादुर तथा बलशाली योद्धा थे। उन्हें मराठी भक्ति साहित्य से बहुत प्रेरणा मिली थी तथा सैन्य प्रशिक्षण ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न की। शिवाजी के नेतृत्व में वे शक्तिशाली भी बन गये। भारत में 18वीं सदी में मराठा सबसे ताकतवर शक्ति बनकर उभरे। राजनीतिक क्षेत्रों में उनकी श्रेष्ठता को बाद के मुगलों ने खुलकर स्वीकार किया। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में छत्रपति शिवाजी ने मराठों को और अधिक शक्तिशाली बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। शिवाजी ने मराठा पहाड़ी जनजातियों को एक सैन्य शक्ति के रूप में संगठित किया। इस समय बीजापुर राज्य का लगभग पतन हो चुका था। शिवाजी ने अनेक दुर्गों पर कब्जा कर

लिया। उनकी बढ़ती हुई शक्ति ने उन्हें बीजापुर राज्य तथा दक्कन के मुगल सूबेदार का दुश्मन बना दिया। युद्धों का एक लम्बा सिलसिला चला, शिवाजी ने बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को मार डाला। औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए अपने मामा शाइस्ता खाँ को भेजा। शिवाजी ने उसके आदमियों को मार डाला, किन्तु शाइस्ता खाँ बच गया। इससे क्रुद्ध होकर औरंगजेब ने अम्बर (आमेर) के राजा जयसिंह को शिवाजी को अधीन करने क लिए भेजा। जयसिंह ने शिवाजी को औरंगजेब के दरबार में जाने के लिए राजी किया, जहाँ उनका अपमान किया गया, उन्हें पकड़कर कैद कर लिया गया। शिवाजी अपनी चतुराई से कारागार से भागने में सफल रहे। उन्होंने मुगलों के खिलाफ अपनी गतिविधियों को फिर से शुरू किया। उन्होंने सूरत को लूटा और स्वयं को सम्राट घोषित किया। सन् 1674 ई० में पुणे के पास रायगढ़ में आयोजित एक भव्य दरबार में उन्हें छत्रपति के रूप में ताज पहनाया गया। इस प्रकार उन्होंने मराठा राज्य की नींव रखी।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

नोट : सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

(क) 1. (d) वलित पर्वत 2. (b) आयनमण्डल 3. (c) गुरुत्वाकर्षण
4. (d) विधान परिषद् 5. (a) थोक में सामान रखने वाला।

(ख) 1. आग्नेय 2. वलित पर्वत 3. विपरित-व्यापारिक पवनें
4. संरचना 5. अवसर।

(ग) 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

(घ) 1. मैण्टल तथा अन्तरतम की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

मैण्टल भूपटल के नीचे 35 किमी से लेकर 2,900 किमी की गहराई तक विस्तृत है। यह सघन तथा दृढ़ शैलों से बना है और इसमें मैग्नीशियम तथा लोहे जैसे खनिजों की अधिकता है। मैण्टल के ऊपरी भाग को दुर्बलता मण्डल कहते हैं, जो लचीली तथा आंशिक रूप से पिघली अवस्था वाली प्लास्टिक परत है, किन्तु इसका निचला भाग ठोस है।

पृथ्वी के केन्द्रीय भाग को अन्तरतम कहते हैं। इसमें अत्यन्त सघन निकिल तथा लोहे की प्रधानता होने के कारण यह परत नाइफ (NIFE) कहलाती है। यहाँ 2,700°C तक तापमान अनुमानित है। अन्तरतम का घनत्व 9.5 से 14.5 तक या कहीं-कहीं इससे भी अधिक है।

2. यद्यपि भूकम्प मात्र कुछ सेकण्ड के लिए आता है फिर भी यह पृथ्वी पर सर्वाधिक शक्तिशाली शक्तियों में गिना जाता है। एक तीव्र भूकम्प से इतनी ऊर्जा बाहर निकलती है, जो परमाणु बम की ऊर्जा से 10,000 गुना अधिक होती है। भूकम्प के विनाशकारी प्रभाव निम्नलिखित हैं—

(i) इमारतें, सडकें पुल तथा अन्य संरचनाएँ क्षतिग्रस्त तथा नष्ट हो जाती हैं।
(ii) बिजली के तारों में आग लगने से भयंकर हानि होती है।

(iii) खतरनाक रसायनों के बिखरने से भी बहुत हानि होती है।
(iv) जन-जीवन की बहुत हानि होती है।
(v) नदियों के मार्ग बदल जाते हैं।
(vi) पर्वतीय क्षेत्रों में भू-स्खलनों से हानि होती है।
(vii) अध: सागरीय भूकम्पीय तरंगें, जिन्हें सूनामी कहा जाता है, अत्यन्त हानिकारक होती हैं।

3. लोकतन्त्र में सत्ताधारी दल या गठबन्धन के संसद सदस्यों को छोड़कर अन्य दलों के सदस्य अधिकाधिक तौर पर विपक्ष का गठन करते हैं। यह लोकतन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह सरकार की जन-विरोधी नीतियों का विरोध करता है, यह मन्त्रिपरिषद् की तानाशाही की जाँच करता है और राजनीतिक विकल्प प्रदान करता है। यह जनमत तैयार करता है और राजनीतिक चेतना जाग्रत करता है। वास्तव में एक लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली को सफल होने के लिए संगठित विपक्ष का होना आवश्यक है।
4. विधान सभा के विपरीत, विधान परिषद्, प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित निकाय नहीं है। इसकी संरचना निम्नलिखित हैं—
   (i) इसके 1/3 सदस्य राज्य की विधान सभा के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं।
   (ii) इसके 1/3 सदस्य स्थानीय सरकारी निकायों, जैसे—नगरपालिका, जिला बोर्ड आदि द्वारा चुने जाते हैं।
   (iii) इसके 1/12 सदस्य राज्य के विश्वविद्यालय-स्नातकों द्वारा चुने जाते हैं।
   (iv) इसके 1/12 सदस्य माध्यमिक स्कूलों, कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा चुने जाते हैं।
   (v) इसके 1/6 सदस्य राज्य के राज्यपाल द्वारा नामांकित किये जाते हैं। ये सदस्य कला, साहित्य, समाज सेवा आदि क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्ति होते हैं।
5. मीडिया आधुनिक लोकतन्त्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोकतन्त्र में सभी वयस्क नागरिकों को मतदान करने और अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार दिया जाता है। इसलिए सत्तारूढ़ और विपक्षी दल जनता के सम्पर्क में रहने और अपने पक्ष में जनमत बनाने की कोशिश करते हैं। इसलिए प्रत्येक लोकतान्त्रिक देश जनता को जनमत बनाने तथा अपने विचार व्यक्त करने की स्वतन्त्रता के अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार जनसम्पर्क तथा जनसंचार के विभिन्न साधन जनमत तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्वस्थ जनमत विकसित करने में भी मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो लोकतन्त्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

❑